अध्याय १६

श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा कृष्ण के अधरों का अमृतपान

अपने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने सोलहवें अध्याय का सारांश इस प्रकार दिया है। जब महाप्रभु के बंगाली भक्त जगन्नाथपुरी लौटे, तो उनके साथ रघुनाथ दास गोस्वामी के चाचा कालिदास भी श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने गये। कालिदास ने बंगाल में सारे वैष्णवों का, यहाँ तक कि झडु ठाकुर तक का, उच्छिष्ट भोजन ग्रहण किया था। इसके कारण जगन्नाथपुरी में उसे श्री चैतन्य महाप्रभु का आश्रय प्राप्त हो सका।

जब कवि कर्णपूर केवल सात वर्ष के थे, तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने हरे कृष्ण महामन्त्र द्वारा उनको दीक्षा दी थी। बाद में वे वैष्णव आचार्यों में महानतम कवि हुए।

जब श्री चैतन्य महाप्रभु ने वल्लभ भोग खाया, तो उन्होंने भगवान् के ऐसे शेष प्रसाद की महिमा का वर्णन किया और तब इस प्रसाद को सारे भक्तों को खिलाया। इस तरह सबों ने कृष्ण के अधरों के अमृत का पान किया।

वन्दे श्री-कृष्ण-चैतन्यं कृष्ण-भावामृतं हि यः ।
आस्वाद्यास्वादयन्भक्तान्प्रेम-दीक्षामशिक्षयत् ॥ १ ॥

वन्दे श्री-कृष्ण-चैतन्यं कृष्ण-भावामृतं हि यः ।
आस्वाद्यास्वादयन्भक्तान्प्रेम-दीक्षामशिक्षयत् ॥ १ ॥

वन्दे—मैं नमस्कार करता हूँ; **श्री-कृष्ण-चैतन्यम्**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **कृष्ण-**

भाव-अमृतम्—कृष्ण-प्रेम के अमृत का; **हि**—अवश्य; **यः**—वे जो; **आस्वाद्य**—आस्वादन करके; **आस्वादयन्**—आस्वादन करवाकर; **भक्तान्**—भक्तगण; **प्रेम**—कृष्ण के प्रेम में; **दीक्षाम्**—दीक्षित; **अशिक्षयत्**—उपदेश दिया।

अनुवाद

मैं उन श्री चैतन्य महाप्रभु को नमस्कार करता हूँ, जिन्होंने स्वयं कृष्ण-प्रेम के अमृत का आस्वादन किया और फिर अपने भक्तों को उपदेश दिया कि उसका आस्वादन किस तरह करें। इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु उन्हें दिव्य ज्ञान में दीक्षित करने के लिए कृष्ण के प्रेमावेश के विषय में उन्हें उपदेश दिया।

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥२॥

जय जय श्री-चैतन्य जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २॥

जय जय—जय जय; **श्री-चैतन्य**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु की; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु की; **जय**—जय हो; **अद्वैत-चन्द्र**—अद्वैत आचार्य की; **जय**—जय हो; **गौर-भक्त-वृन्द**—श्री चैतन्य महाप्रभु के सभी भक्तों की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्री अद्वैत आचार्य की जय हो! तथा महाप्रभु के समस्त भक्तवृन्द की जय हो!

এই-মত মহাপ্রভু রহেন নীলাচলে ।
ভক্ত-গণ-সঙ্গে সদা প্রেম-বিহ্বলে ॥৩॥

এই-মত মহাপ্রভু রহেন নীলাচলে ।
ভক্ত-গণ-সঙ্গে সদা প্রেম-বিহ্বলে ॥ ৩॥

এই-মত—इस तरह; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **रहेन**—रहते; **नीलाचले**—जगन्नाथ पुरी में; **भक्त-गण-सङ्गे**—भक्तों के संग में; **सदा**—सदैव; **प्रेम-विह्वले**—प्रेमावेश में निमग्न।

अनुवाद

इस तरह श्री चैतन्य महाप्रभु अपने भक्तों के साथ सदैव प्रेम-भक्ति में निमग्न रहते हुए जगन्नाथ पुरी में रहे।

বর্ষান্তরে আইলা সব গৌড়ের ভক্ত-গণ ।
পূর্ববৎ আসি' কৈল প্রভুর মিলন ॥৪॥

वर्षान्तरे आइला सब गौड़ेर भक्त-गण ।
पूर्ववत् आसि' कैल प्रभुर मिलन ॥ ४ ॥

वर्ष-अन्तरे—अगले वर्ष; **आइला**—आये; **सब**—सभी; **गौड़ेर**—बंगाल के; **भक्त-गण**—भक्तगण; **पूर्व-वत्**—पिछले वर्षों की तरह; **आसि'**—आकर; **कैल**—किया; **प्रभुर मिलन**—श्री चैतन्य महाप्रभु से मिलाप।

अनुवाद

अगले वर्ष, हमेशा की तरह सब भक्तगण बंगाल से जगन्नाथ पुरी गये और पिछले वर्षों की तरह वहाँ भक्तों तथा श्री चैतन्य महाप्रभु का मिलाप हुआ।

তাঁ-সবার সঙ্গে আইল কালিদাস নাম ।
কৃষ্ণ-নাম বিনা তেঁহো নাহি কহে আন ॥৫॥

ताँ-सबार सङ्गे आइल कालिदास नाम ।
कृष्ण-नाम विना तेंहो नाहि कहे आन ॥ ५ ॥

ताँ-सबार सङ्गे—उन सबके साथ; **आइल**—आये; **कालि-दास नाम**—कालिदास नामक एक सज्जन; **कृष्ण-नाम**—कृष्ण का पवित्र नाम; **विना**—सिवाय; **तेंहो**—वे; **नाहि**—नहीं; **कहे**—कहते; **आन**—और कुछ भी।

अनुवाद

बंगाल के भक्तों के साथ कालिदास नाम के एक सज्जन आये। वे पवित्र कृष्णनाम के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं कहते थे।

মহা-ভাগবত তেঁহো সরল উদার ।
কৃষ্ণ-নাম-'সঙ্কেতে' চালায় ব্যবহার ॥৬॥

महा-भागवत तेंहो सरल उदार ।
कृष्ण-नाम-'सङ्केते' चालाय व्यवहार ॥ ६ ॥

महा-भागवत—बहुत उन्नत भक्त; **तेंहो**—वे; **सरल उदार**—सरल और उदार; **कृष्ण-नाम-सङ्केते**—कृष्ण के पवित्र नामक का कीर्तन; **चालाय**—करते; **व्यवहार**—कामकाज करते समय।

अनुवाद

कालिदास बहुत उन्नत भक्त थे, किन्तु थे सरल और उदार। वे अपने सारे काम-काज करते समय कृष्ण नाम का कीर्तन करते रहते थे।

কৌতুকেতে তেঁহো যদি পাশক খেলায় ।
'হরে কৃষ্ণ' 'কৃষ্ণ' করি' পাশক চালায় ॥ ৭ ॥

कौतुकेते तेंहो यदि पाशक खेलाय ।
'हरे कृष्ण' 'कृष्ण' करि' पाशक चालाय ॥ ७ ॥

कौतुकेते—हँसी में; **तेंहो**—वे; **यदि**—जब; **पाशक खेलाय**—पाँसे खेलते; **हरे कृष्ण**—भगवान् कृष्ण का पवित्र नाम; **कृष्ण**—कृष्ण; **करि'**—कीर्तन; **पाशक चालाय**—पाँसा फेंकते।

अनुवाद

जब वह हँसी में पाँसे खेलते, तो भी वे हरे कृष्ण कहकर पाँसा फेंकते थे।

तात्पर्य

इस सम्बन्ध में श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर इस युग के लोगों को सतर्क करते हैं कि वे कालिदास जैसे महाभागवत की हँसी का अनुकरण न करें। यदि कोई हरे कृष्ण महामन्त्र का कीर्तन करते हुए पाँसा खेलने या जुआ खेलने का अनुकरण करता है, तो वह निश्चित रूप से पवित्र नाम के प्रति अपराध का भागी बनेगा। जैसाकि कहा गया है—*हरि-नाम-बले पापे प्रवृत्ति*—मनुष्य को हरे कृष्ण मन्त्र के कीर्तन के बल पर पापकर्म नहीं करने चाहिए। पाँसा खेलना निश्चित रूप से जुआ खेलना है, किन्तु यहाँ यह स्पष्ट कहा गया है कि कालिदास केवल हँसी में ऐसा करते थे। *महाभागवत* कुछ भी कर

सकते हैं, किन्तु वह मूलभूत सिद्धान्तों को कभी नहीं भूलते। इसीलिए कहा गया है *तार वाक्य क्रियामुद्रा विज्ञेह ना बुझय*—"शुद्ध वैष्णव के कार्यकलापों को कोई नहीं समझ सकता।" हमें कालिदास का अनुकरण नहीं करना है।

রঘুনাথ-দাসের তেঁহো হয় জ্ঞাতি-খুড়া ।
বৈষ্ণবের উচ্ছিষ্ট খাইতে তেঁহো হৈল বুড়া ॥৮॥

रघुनाथ-दासेर तेंहो हय ज्ञाति-खुड़ा ।
वैष्णवेर उच्छिष्ट खाइते तेंहो हैल बुड़ा ॥८॥

रघुनाथ-दासेर—रघुनाथ दास गोस्वामी के; **तेंहो**—वे (कालिदास); **हय**—है; **ज्ञाति**—सम्बन्धी; **खुड़ा**—चाचा; **वैष्णवेर**—वैष्णवों द्वारा; **उच्छिष्ट**—बचा हुआ भोजन; **खाइते**—खाने का; **तेंहो**—वे; **हैल**—करते; **बुड़ा**—बुढ़ापे में।

अनुवाद

कालिदास रघुनाथ दास गोस्वामी के चाचा थे। वे आजीवन, यहाँ तक कि वृद्धावस्था में भी, वैष्णवों द्वारा छोड़े गये उच्छिष्ट को खाने का प्रयास करते।

গৌড়-দেশে হয় যত বৈষ্ণবের গণ ।
সবার উচ্ছিষ্ট তেঁহো করিল ভোজন ॥৯॥

गौड़-देशे हय यत वैष्णवेर गण ।
सबार उच्छिष्ट तेंहो करिल भोजन ॥९॥

गौड़-देशे—बंगाल में; **हय**—है; **यत**—ज्यादा से; **वैष्णवेर गण**—वैष्णव गण; **सबार**—सबों का; **उच्छिष्ट**—बचा हुआ भोजन; **तेंहो**—उन्होंने; **करिल भोजन**—खाया।

अनुवाद

कालिदास ने, बंगाल में जितने वैष्णव थे, उन सबों का उच्छिष्ट खाया था।

ব্রাহ্মণ-বৈষ্ণব যত—ছোট, বড় হয় ।
উত্তম-বস্তু ভেট লঞা তাঁর ঠাঞি যায় ॥১০॥

ब्राह्मण-वैष्णव ग्रत—छोट, बड़ हय ।
उत्तम-वस्तु भेट लञा ताँर ठाञि ग्राय ॥ १० ॥

ब्राह्मण-वैष्णव—ब्राह्मण कुलों से आये हुए वैष्णव; **ग्रत**—सभी; **छोट**—नये शिष्य; **बड़**—बड़े भक्त; **हय**—हों; **उत्तम-वस्तु**—उत्तम खाद्य वस्तुएँ; **भेट लञा**—वस्तुएँ भेंट; **ताँर ठाञि**—उनको; **ग्राय**—करते।

अनुवाद

वे ब्राह्मण कुलों में उत्पन्न समस्त वैष्णवों के पास जाते, चाहे वे नये भक्त हों या उन्नत भक्त हों, और उन्हें उत्तम खाद्य वस्तुएँ भेंट करते थे।

ताँर ठाञि शेष-पात्र लयेन मागिया ।
काहाँ ना पाय, तबे रहे लुकाञा ॥ ११ ॥
ताँर ठाञि शेष-पात्र लयेन मागिया ।
काहाँ ना पाय, तबे रहे लुकाञा ॥ ११ ॥

ताँर ठाञि—उनसे; **शेष-पात्र**—बची हुई थाली; **लयेन**—लेते; **मागिया**—माँगकर; **काहाँ**—कहाँ; **ना पाय**—नहीं पाते; **तबे**—तब; **रहे**—रहते; **लुकाञा**—छिपकर।

अनुवाद

वे ऐसे वैष्णवों से जूठन माँगते और यदि उन्हें कुछ नहीं मिलता था, तो वे छिप जाते थे।

भोजन करिले पात्र फेलाञा ग्राय ।
लुकाञा सेइ पात्र आनि' चाटि' खाय ॥ १२ ॥
भोजन करिले पात्र फेलाञा ग्राय ।
लुकाञा सेइ पात्र आनि' चाटि' खाय ॥ १२ ॥

भोजन करिले—भोजन के बाद; **पात्र**—पत्तों की थाली; **फेलाञा ग्राय**—फेंक देते; **लुकाञा**—छिपकर; **सेइ पात्र**—वह पत्तों की थाली; **आनि'**—लेकर; **चाटि' खाय**—जूठन खाते।

अनुवाद

जब वैष्णव भोजन कर लेते और अपने पत्तल फेंक देते, तो कालिदास छुपी जगह से बाहर निकल आते और पत्तलों को लेकर जूठन चाटते।

শূদ্র-বৈষ্ণবের ঘরে যায় ভেট লঞা ।
এই-মত তাঁর উচ্ছিষ্ট খায় লুকাঞা ॥ ১৩ ॥

शूद्र-वैष्णवेर घरे ग्राय भेट लञा ।
एइ-मत ताँर उच्छिष्ट खाय लुकाञा ॥ १३ ॥

शूद्र-वैष्णवेर—शूद्र परिवारों में उत्पन्न वैष्णवों के; **घरे**—घरों में; **ग्राय**—जाते; **भेट लञा**—भेंट लेकर; **एइ-मत**—इस प्रकार; **ताँर**—उनका; **उच्छिष्ट**—बचा हुआ, जूठन; **खाय**—खाते; **लुकाञा**—छिपकर।

अनुवाद

वे शूद्र परिवारों में उत्पन्न वैष्णवों के भी घरों में भेंट लेकर जाते। तब वे छिप जाते और जब वे जूठन फेंकते तो उसे खाते।

ভূঞিমালি-জাতি, 'বৈষ্ণব'—'ঝড়ু' তাঁর নাম ।
আম্র-ফল লঞা তেঁহো গেলা তাঁর স্থান ॥ ১৪ ॥

भूञिमालि-जाति, 'वैष्णव'—'झड़ु' ताँर नाम ।
आम्र-फल लञा तेंहो गेला ताँर स्थान ॥ १४ ॥

भूञिमालि-जाति—भुँइमालि जाते के; **वैष्णव**—एक महान् वैष्णव; **झड़ु**—झड़ु; **ताँर**—उनका; **नाम**—नाम; **आम्र-फल**—आम फल; **लञा**—लेकर; **तेंहो**—वे; **गेला**—गये; **ताँर स्थान**—उनके घर।

अनुवाद

झड़ु ठाकुर नाम के एक महान् वैष्णव थे, जो भुँइमालि जाति के थे। "कालिदास उनके घर अपने साथ आम लेकर गये।

तात्पर्य

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर की टिप्पणी है कि, "कालिदास तथा झड़ु ठाकुर दोनों ही की पूजा भेदो या भदुया नामक गाँव में श्रीपाटबाटी नामक स्थान में की जाती है। यह गाँव रघुनाथ दास गोस्वामी की जन्मभूमि कृष्णपुरा से, जो कि बर्दवान रेललाइन के ब्यांडेल जंक्शन से लगभग एक मील पश्चिम में है, लगभग तीन मील दक्षिण की ओर स्थित है। वहाँ का डाकघर देवानन्द पुर है। झड़ु ठाकुर श्री मदनगोपाल की मूर्ति की पूजा करते थे। आज भी इस

मूर्ति की पूजा रामप्रसाद दास नामक भक्त द्वारा की जाती है, जो रामायेत जाति के हैं। कहा जाता है कि कालिदास जिस मूर्ति की पूजा करते थे, वह अभी तक सरस्वती नदी के तट पर शंख्य नामक गाँव में पूजी जाती थी, किन्तु त्रिवेणी ग्राम के मतिलाल चट्टोपाध्याय नामक एक महाशय इस मूर्ति को उठा ले गये। अब यह मूर्ति उनके घर पर पूजी जाती है।"

आम्र भेट दिया ताँर चरण वन्दिला ।
ताँर पत्नीरे तबे नमस्कार कैला ॥ १५ ॥

आम्र भेट दिया ताँर चरण वन्दिला ।
ताँर पत्नीरे तबे नमस्कार कैला ॥ १५ ॥

आम्र—आम; **भेट**—भेंट; **दिया**—देकर; **ताँर**—उनके; **चरण**—चरण; **वन्दिला**—नमस्कार किया; **ताँर पत्नीरे**—उनकी पत्नी को भी; **तबे**—उसके बाद; **नमस्कार कैला**—नमस्कार किया।

अनुवाद

कालिदास ने वे आम झडु ठाकुर को भेंट किये और उन्हें नमस्कार किया। तब उन्होंने ठाकुर की पत्नी को भी नमस्कार किया।

पत्नी-सहित तेँहो आछेन वसिया ।
बहु सम्मान कैला कालिदासेरे देखिया ॥ १६ ॥

पत्नी-सहित तेँहो आछेन वसिया ।
बहु सम्मान कैला कालिदासेरे देखिया ॥ १६ ॥

पत्नी-सहित—उनकी पत्नी के साथ; **तेँहो**—वे (झडु ठाकुर); **आछेन वसिया**—बैठे थे; **बहु**—बहुत; **सम्मान**—नमस्कार; **कैला**—किया; **कालिदासेरे देखिया**—कालिदास को देखकर।

अनुवाद

जब कालिदास झडु ठाकुर के यहाँ गये, तो उन्होंने देखा कि वे साधु पुरुष अपनी पत्नी के साथ बैठे हैं। ज्योंही झडु ठाकुर ने कालिदास को देखा, उन्होंने भी उसी तरह नमस्कार किया।

ইষ্টগোষ্ঠী কত-ক্ষণ করি' তাঁর সনে ।
ঝড়ু-ঠাকুর কহে তাঁরে মধুর বচনে ॥ ১৭ ॥

इष्टगोष्ठी कत-क्षण करि' ताँर सने ।
झड़ु-ठाकुर कहे ताँरे मधुर वचने ॥ १७ ॥

इष्ट-गोष्ठी—चर्चा; **कत-क्षण**—कुछ काल तक; **करि'**—की; **ताँर सने**—उनके साथ; **झड़ु-ठाकुर**—झडु ठाकुर; **कहे**—कहा; **ताँरे**—उनको (कालिदास को); **मधुर वचने**—मधुर शब्दों में।

अनुवाद

कालिदास के साथ कुछ काल तक चर्चा करने के बाद झड़ु ठाकुर ने उनसे निम्नलिखित मधुर शब्दों में कहा।

"আমি—নীচ-জাতি, তুমি,—অতিথি সর্বোত্তম ।
কোন্‌প্রকারে করিমু আমি তোমার সেবন? ॥ ১৮ ॥

"आमि—नीच-जाति, तुमि,—अतिथि सर्वोत्तम ।
कोन् प्रकारे करिमु आमि तोमार सेवन? ॥ १८ ॥

आमि—मैं; **नीच-जाति**—नीच जाति का; **तुमि**—आप; **अतिथि**—अतिथि; **सर्व-उत्तम**—अति सम्मानित; **कोन् प्रकारे**—कैसे; **करिमु**—करूँ; **आमि**—मैं; **तोमार सेवन**—आपकी सेवा।

अनुवाद

"मैं नीच जाति का हूँ और आप मेरे अति सम्मानित अतिथि हैं। मैं किस तरह आपकी सेवा करूँ?

আজ্ঞা দেহ',—ব্রাহ্মণ-ঘরে অন্ন লঞা দিয়ে ।
তাহাঁ তুমি প্রসাদ পাও, তবে আমি জীয়ে" ॥ ১৯ ॥

आज्ञा देह',—ब्राह्मण-घरे अन्न लञा दिये ।
ताहाँ तुमि प्रसाद पाओ, तबे आमि जीये" ॥ १९ ॥

आज्ञा देह'—मुझे आज्ञा दें; **ब्राह्मण-घरे**—ब्राह्मण के घर; **अन्न**—भोजन; **लञा दिये**—मैं भेज दूँ; **ताहाँ**—वहाँ; **तुमि**—आप; **प्रसाद पाओ**—प्रसाद ग्रहण करें; **तबे**—तब; **आमि**—मैं; **जीये**—जी पाऊँगा।

अनुवाद

"यदि आप आज्ञा दें, तो मैं कुछ भोजन ब्राह्मण के घर भेज दूँ, जहाँ आप प्रसाद ग्रहण कर सकते हैं। यदि आप ऐसा करें, तो मैं अत्यन्त सुखपूर्वक जी पाऊँगा।"

কালিদাস কহে,—"ঠাকুর, কৃপা কর মোরে ।
তোমার দর্শনে আইনু মুই পতিত পামরে ॥২০॥

কালিদাস কহে,—"ঠাকুর, কৃপা কর মোরে ।
তোমার দর্শনে আইনু মুই পতিত পামরে ॥ ২০॥

कालिदास कहे—कालिदास ने कहा; **ठाकुर**—हे ठाकुर; **कृपा कर**—कृपा करें; **मोरे**—मुझ पर; **तोमार दर्शने**—आपका दर्शन करने; **आइनु**—आया हूँ; **मुइ**—मैं; **पतित पामरे**—बहुत नीच और पापी।

अनुवाद

कालिदास ने उत्तर दिया, "हे महोदय, आप मुझ पर कृपा करें। मैं आपका दर्शन करने आया हूँ, यद्यपि मैं अत्यन्त नीच तथा पापी हूँ।

পবিত্র হ-ইনু মুই পাইনু দরশন ।
কৃতার্থ হ-ইনু, মোর সফল জীবন ॥২১॥

পবিত্র হ-ইনু মুই পাইনু দরশন ।
কৃতার্থ হ-ইনু, মোর সফল জীবন ॥ ২১॥

पवित्र ह-इनु—पवित्र हो गया हूँ; **मुइ**—मैं; **पाइनु दरशन**—आपका दर्शन मिलने से; **कृत-अर्थ**—कृतज्ञ; **ह-इनु**—मैं हो चुका हूँ; **मोर**—मेरा; **सफल**—सफल; **जीवन**—जीवन।

अनुवाद

"आपके दर्शन मात्र से मैं पवित्र हो गया हूँ। मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ, क्योंकि अब मेरा जीवन सफल हो गया है।

এক বাঞ্ছা হয়,—যদি কৃপা করি' কর ।
পাদ-রজ দেহ', পাদ মোর মাথে ধর'' ॥২২॥

एक वाञ्छा हय,—यदि कृपा करि' कर ।
पाद-रज देह', पाद मोर माथे धर" ॥ २२ ॥

एक वाञ्छा—एक इच्छा; **हय**—है; **यदि**—अगर; **कृपा करि'**—कृपा करके; **कर**—आप करें; **पाद-रज**—आपके चरणों की धूल; **देह'**—दें; **पाद**—पाँव; **मोर**—मेरे; **माथे**—सिर पर; **धर**—कृपया रखें।

अनुवाद

"हे महोदय, मेरी एक इच्छा है। आप मेरे सिर पर अपना पाँव रखने की कृपा करें, जिससे आपके पाँव की धूल मेरे सिर का स्पर्श कर सके।"

ঠাকুর কহে,—"ঐছে বাত্‌ কহিতে না যুয়ায় ।
আমি—নীচ-জাতি, তুমি—সুসজ্জন রায়" ॥২৩॥

ठाकुर कहे,—"ऐछे बात् कहिते ना युयाय ।
आमि—नीच-जाति, तुमि—सुसज्जन राय" ॥ २३ ॥

ठाकुर कहे—झडु ठाकुर ने कहा; **ऐछे बात्**—ऐसी विनति; **कहिते ना युयाय**—कहना मत; **आमि**—मैं; **नीच-जाति**—नीच जाति के परिवार से आया; **तुमि**—आप; **सु-सत्-जन राय**—अति सम्माननीय और धनी सज्जन।

अनुवाद

झडु ठाकुर ने उत्तर दिया, "मुझसे इसके लिए कहना आपको शोभा नहीं देता। मैं अत्यन्त निम्न जाति का हूँ, जबकि आप सम्माननीय धनी सज्जन हैं।"

তবে কালিদাস শ্লোক পড়ি' শুনাইল ।
শুনি' ঝড়ু-ঠাকুরের বড় সুখ হ-ইল ॥২৪॥

तबे कालिदास श्लोक पड़ि' शुनाइल ।
शुनि' झड़ु-ठाकुरेर बड़ सुख ह-इल ॥ २४ ॥

तबे—तब; **कालिदास**—कालिदास; **श्लोक**—श्लोक; **पड़ि'**—पढ़कर; **शुनाइल**—सुनाने का कार्य; **शुनि'**—सुनाया; **झड़ु-ठाकुरेर**—झडु ठाकुर के; **बड़**—बहुत महान्; **सुख**—सुखी; **ह-इल**—हुए।

अनुवाद

तब कालिदास ने कुछ श्लोक सुनाये, जिन्हें सुनकर झड़ु ठाकुर अत्यन्त सुखी हुए।

न मेऽभक्तश्चतुर्वेदी मद्भक्तः श्व-पचः प्रियः ।
तस्मै देयं ततो ग्राह्यं स च पूज्यो यथा ह्यहम् ॥२५॥

न मेऽभक्तश्चतुर्वेदी मद्भक्तः श्व-पचः प्रियः ।
तस्मै देयं ततो ग्राह्यं स च पूज्यो यथा ह्यहम् ॥ २५ ॥

न—नहीं; **मे**—मेरा; **अभक्तः**—शुद्ध भक्ति से रहित; **चतुः-वेदी**—चारों वेदों में पण्डित; **मत्-भक्तः**—मेरा भक्त; **श्व-पचः**—कुत्ते खाने वाले परिवार में के; **प्रियः**—अत्यन्त प्रिय; **तस्मै**—उनको (शुद्ध भक्त); **देयम्**—दे सकते हैं; **ततः**—उनके पास से; **ग्राह्यम्**—स्वीकारना (उच्छिष्ट भोजन); **सः**—वह मनुष्य; **च**—भी; **पूज्यः**—पूजा करने योग्य; **यथा**—जितना; **हि**—अवश्य; **अहम्**—मैं।

अनुवाद

"'कोई संस्कृत साहित्य में कितना ही विद्वान पण्डित क्यों न हो, यदि वह शुद्ध भक्ति में नहीं लगा है, तो वह मेरा भक्त नहीं माना जाता। किन्तु यदि चण्डाल परिवार में उत्पन्न कोई व्यक्ति शुद्ध भक्त होता है, जिसे सकाम कर्म या ज्ञान के माध्यम से भोग की इच्छा नहीं रहती, तो वह मुझे अत्यन्त प्रिय होता है। उसे सभी तरह का आदर दिया जाना चाहिए और वह जो भी दे उसे स्वीकार किया जाना चाहिए, क्योंकि ऐसे भक्त मेरे ही समान पूज्य हैं।'

तात्पर्य

यह श्लोक भगवान् द्वारा कहा गया है और *हरिभक्ति विलास* में पाया जाता है।

विप्राद्द्वि-षड्-गुण-युतादरविन्द-नाभ-
पादारविन्द-विमुखाच्श्व-पचं वरिष्ठम् ।
मन्ये तदर्पित-मनो-वचनेहितार्थ-
प्राणं पुनाति स कुलं न तु भूरि-मानः ॥२६॥

विप्राद् द्वि-षड्-गुण-युतादरविन्द-नाभ-
पादारविन्द-विमुखात्श्व-पचं वरिष्ठम् ।
मन्ये तदर्पित-मनो-वचनेहितार्थ-
प्राणं पुनाति स कुलं न तु भूरि-मानः ॥ २६ ॥

विप्रात्—ब्राह्मण से; **द्वि-षट्-गुण-युतात्**—बारहों ब्राह्मणों की विद्या से युक्त; **अरविन्द-नाभ**—भगवान् विष्णु के, कमल जैसी नाभि वाले; **पाद-अरविन्द**—चरणकमलों को; **विमुखात्**—भक्ति से विहीन व्यक्ति; **श्व-पचम्**—चण्डाल अर्थात् कुत्ते का मांस खाने की आदतवाला व्यक्ति; **वरिष्ठम्**—अधिक महिमाशाली; **मन्ये**—मानता हूँ; **तत्-अर्पित**—उसको समर्पित; **मनः**—मन; **वचन**—वचन; **ईहित**—कर्म; **अर्थ**—धन; **प्राणम्**—जीवन; **पुनाति**—शुद्ध करता है; **सः**—वह; **कुलम्**—अपने कुल को; **न तु**—किन्तु नहीं; **भूरि-मानः**—ऐसे गुणों से युक्त गर्वित ब्राह्मण।

अनुवाद

"'ब्राह्मण कुल में जन्मा और बारहों ब्राह्मण गुणों से सम्पन्न व्यक्ति योग्य होते हुए भी यदि कमलनाभ भगवान् कृष्ण के चरणकमलों की भक्ति नहीं करता, तो वह उस चण्डाल के तुल्य भी नहीं होता, जो अपना मन, वचन, कर्म, धन तथा जीवन भगवान् की सेवा में समर्पित कर चुका है। केवल ब्राह्मण कुल में जन्म लेना अथवा ब्राह्मण गुणों से युक्त होना पर्याप्त नहीं है। मनुष्य को भगवान् का शुद्ध भक्त बनना चाहिए। यदि कोई श्वपच या चण्डाल व्यक्ति भक्त होता है, तो वह न केवल अपना, अपितु अपने पूरे परिवार का उद्धार कर देता है, जबकि अभक्त ब्राह्मण, ब्राह्मण गुणों से युक्त होते हुए भी अपने आपको भी पवित्र नहीं कर सकता, अपने परिवार की बात तो दूर रही।'

तात्पर्य

यह श्लोक तथा अगला श्लोक *श्रीमद्भागवत* (७.६.१० तथा ३.३३.७) से उद्धृत हैं।

अहो बत श्व-पचोऽतो गरीयान्
यज्जिह्वाग्रे वर्तते नाम तुभ्यम् ।
तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्या
ब्रह्मानूचुर्नाम गृणन्ति ये ते ॥२७॥

अहो बत श्व-पचोऽतो गरीयान्
यज्जिह्वाग्रे वर्तते नाम तुभ्यम् ।
तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्या
ब्रह्मानूचुर्नाम गृणन्ति ये ते ॥ २७॥

अहो बत—यह कितना अद्‌भुत है; **श्व-पचः**—कुत्ते का मांस खानेवाला; **अतः**—दीक्षित ब्राह्मण से भी; **गरीयान्**—अधिक महिमावान; **यत्**—जिसकी; **जिह्वा-अग्रे**—जिह्वा पर; **वर्तते**—रहता है; **नाम**—पवित्र नाम; **तुभ्यम्**—आपका; **तेपुः**—किया है; **तपः**—तप; **ते**—वे; **जुहुवुः**—यज्ञ किये हैं; **सस्नुः**—तीर्थों में स्नान किया है; **आर्याः**—वास्तव में आर्य जाति का; **ब्रह्म**—सारे वेद; **अनूचुः**—अभ्यास किया है; **नाम**—पवित्र नाम; **गृणन्ति**—जप करता है; **ये**—जो; **ते**—वे।

अनुवाद

"'हे प्रभु, जो भी व्यक्ति आपके पवित्र नाम को सदा अपनी जिह्वा पर रखता है, वह दीक्षित ब्राह्मण से भी बढ़कर है। भले ही उसने श्वपच (चण्डाल) कुल में जन्म लिया हो और भौतिकता की दृष्टि से मनुष्यों में अधम हो, फिर भी वह महिमामंडित है। भगवान् के पवित्र नाम का जप करने की यही तो अद्‌भुत शक्ति है! जो पवित्र नाम का जप करता है, समझ लो कि वह सभी तरह की तपस्याएँ कर चुका है। वह सारे वेदों का अध्ययन कर चुका है, उसने वेदवर्णित सारे महान् यज्ञ सम्पन्न कर लिये हैं और उसने समस्त तीर्थस्थलों में पहले ही स्नान कर लिया है और सचमुच वही आर्य है।'"

শুনি' ঠাকুর কহে,—"শাস্ত্র এই সত্য কয় ।
সেই শ্রেষ্ঠ, ঐছে যাঁতে কৃষ্ণ-ভক্তি হয় ॥২৮॥

শুনি' ঠাকুর কহে,—"শাস্ত্র এই সত্য কয় ।
সেই শ্রেষ্ঠ, ঐছে যাঁতে কৃষ্ণ-ভক্তি হয় ॥ ২৮॥

শুনি'—सुनकर; **ঠাকুর কহে**—झडु ठाकुर ने कहा; **শাস্ত্র**—प्रामाणिक शास्त्र; **এই**—यह; **সত্য**—सत्य; **কয়**—कहते हैं; **সেই**—वे; **শ্রেষ্ঠ**—महान्; **ঐছে**—इस तरह; **যাঁতে**—जिसमें; **কৃষ্ণ-ভক্তি**—कृष्ण की भक्ति; **হয়**—है।

अनुवाद

श्रीमद्भागवत शास्त्र से इन उद्धरणों को सुनकर झडु ठाकुर ने उत्तर दिया, "हाँ, यह सच है, क्योंकि यह शास्त्र का कथन है। किन्तु यह उसके लिए सत्य है, जो कृष्ण-भक्ति में वास्तव में अग्रसर हो।

आमि—नीच-जाति, आमार नाहि कृष्ण-भक्ति ।
अन्य ऐछे हय, आमाय नाहि ऐछे शक्ति'' ॥२९॥

आमि—नीच-जाति, आमार नाहि कृष्ण-भक्ति ।
अन्य ऐछे हय, आमाय नाहि ऐछे शक्ति" ॥ २९ ॥

आमि—मैं; **नीच-जाति**—निम्न जाति का; **आमार**—मेरी; **नाहि**—नहीं है; **कृष्ण-भक्ति**—कृष्ण भक्ति; **अन्य**—अन्य; **ऐछे हय**—हो सकते हैं; **आमाय**—मुझमें; **नाहि**—नहीं है; **ऐछे शक्ति**—ऐसी शक्ति।

अनुवाद

"ऐसा पद अन्यों के लिए उपयुक्त हो सकता है, किन्तु मुझमें ऐसी आध्यात्मिक शक्ति नहीं है। मैं तो नीच जाति का हूँ और मुझमें रंच मात्र भी कृष्ण-भक्ति नहीं है।"

तात्पर्य

अपने कथन में झडु ठाकुर अपने आपको निम्न जाति में उत्पन्न व्यक्ति बताते हैं, जिनके पास भगवान् कृष्ण का प्रामाणिक भक्त बनने की कोई योग्यता नहीं है। वे स्वीकार करते हैं कि यदि निम्न कुल में उत्पन्न व्यक्ति वैष्णव हो, तो वह अत्यन्त उच्च होता है। किन्तु उन्हें लगता है कि *श्रीमद्भागवत* के ये विवरण अन्यों पर लागू होने के लिए हैं; वे उन पर लागू नहीं होते। झडु ठाकुर की प्रवृत्ति सच्चे वैष्णव के अनुरूप है, क्योंकि वैष्णव अपने आपको कभी उच्च नहीं मानता, चाहे वह कितने ही बड़े पद को प्राप्त क्यों न हो। वह सदैव विनीत तथा विनम्र रहता है और कभी भी अपने आपको बड़ा भक्त नहीं मानता। वह अपने आपको निम्न स्थान पर रखता है, किन्तु इसका अर्थ यह नहीं होता कि वह सचमुच ही निम्न है। एक बार सनातन गोस्वामी ने कहा कि वे निम्न जाति के हैं, क्योंकि यद्यपि वे ब्राह्मण कुल में उत्पन्न थे, किन्तु सरकारी मन्त्री

होने के कारण उनकी संगति म्लेच्छों तथा यवनों से थी। इसी तरह झडु ठाकुर भी अपने आपको नीच जाति के बतलाते हैं, यद्यपि वास्तव में वे ब्राह्मण कुल में उत्पन्न अनेक व्यक्तियों से भी बहुत उच्च स्तर पर थे। इसका प्रमाण न केवल *श्रीमद्भागवत* में है, जैसाकि कालिदास ने श्लोक २६ तथा २७ को उद्धृत किया है, अपितु अन्य शास्त्रों में भी इस निर्णय के पर्याप्त प्रमाण हैं। उदाहरणार्थ, *महाभारत* (वनपर्व, अध्याय १७७, श्लोक २०) में कहा गया है :

शूद्रे तु यद्भवेल्लक्ष्म द्विजे तच्च न विद्यते।
न वै शूद्रो भवेच्छूद्रो ब्राह्मणो न च ब्राह्मणः॥

"यदि ब्राह्मण के लक्षण शूद्र जाति में जन्मे व्यक्ति में पाये जाँय और ब्राह्मण जाति में जन्मे व्यक्ति में न हों, तो उस शूद्र को शूद्र नहीं मानना चाहिए और न उस ब्राह्मण को ब्राह्मण मानना चाहिए।"

इसी प्रकार *वन पर्व* के अध्याय २०३, श्लोक ११-१२ में कहा गया है :

शूद्रयोनौ हि जातस्य सद्गुणानुपतिष्ठतः।
आर्जवे वर्तमानस्य ब्राह्मण्यमभिजायते॥

"यदि शूद्र कुल में उत्पन्न व्यक्ति ब्राह्मण गुण यथा सत्य, शम, दम (आत्म संयम) तथा आर्जव (सरलता) उत्पन्न कर लेता है, तो वह ब्राह्मण का उच्च पद प्राप्त करता है।"

और *अनुशासन पर्व* के अध्याय १६३ में कहा गया है :

स्थितो ब्राह्मणधर्मेण ब्राह्मण्यमुपजीवति।
क्षत्रियो वाथ वैश्यो वा ब्रह्मभूयः स गच्छति॥
एभिस्तु कर्मभिर्देवि शुभैराचरितैस्तथा।
शूद्रो ब्राह्मणतां याति वैश्यः क्षत्रियतां व्रजेत॥
न योनिर्नापि संस्कारो न श्रुतं न च सन्ततिः।
कारणानि द्विजत्वस्य वृत्तमेव तु कारणम्॥

"यदि कोई वास्तव में ब्राह्मण वृत्ति में स्थित है, तो उसे ब्राह्मण माना जाना चाहिए, भले ही वह क्षत्रिय या वैश्य कुल में उत्पन्न क्यों न हो। हे देवी, यदि शूद्र कुल में जन्मा व्यक्ति भी ब्राह्मण की वृत्ति एवं शुद्ध आचार में लगा हो, तो वह ब्राह्मण बन जाता है। इतना ही नहीं, एक वैश्य क्षत्रिय बन सकता है।

इसलिए न तो किसी के जन्म का स्रोत, न उसके संस्कार, न ही शिक्षा ब्राह्मण के मानदंड हैं। *वृत्त* अर्थात् प्रवृत्ति ही वास्तविक मानदण्ड है, जिससे कोई ब्राह्मण कहलाता है।"

हमने देखा है कि ऐसा व्यक्ति जो डाक्टर का पुत्र नहीं है और जिसने मेडिकल कालेज का मुँह नहीं देखा, कभी-कभी चिकित्सा करता है। शल्य क्रिया के क्षेत्र में व्यावहारिक ज्ञान के द्वारा तथा किस तरह औषधियों को मिलाया जाय या विशेष रोगों के लिए कौन सी औषधि कैसे दी जाए, इसके ज्ञान के द्वारा भी व्यक्ति प्रमाण-पत्र पा सकता है और व्यावहारिक क्षेत्र में चिकित्सक बन सकता है। वह चिकित्सा कार्य करके डाक्टर कहला सकता है। भले ही योग्य चिकित्सक उसे ओझा मानें, किन्तु सरकार उसके कार्य को मान्यता प्रदान करेगी। विशेषतया, भारत में ऐसे अनेक व्यक्ति हैं, जो सफलतापूर्वक चिकित्सा कार्य करते हैं। इन्हें सरकार भी मान्यता देती है। इसी तरह यदि कोई ब्राह्मण-सेवा या वृत्ति में लगा रहता है, तो उसे ब्राह्मण माना जाना चाहिए, चाहे वह जिस किसी कुल में उत्पन्न हो। यही समस्त शास्त्रों का निर्णय है।

श्रीमद्भागवत (७.११.३५) में कहा गया है :

यस्य यल्लक्षणं प्रोक्तं पुंसो वर्णाभिव्यञ्जकम्।
यदन्यत्रापि दृश्येत तत्तेनैव विनिर्दिशेत्॥

यह नारद मुनि का महाराज युधिष्ठिर से कथन है, जिसमें नारद बतलाते हैं कि ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य के लक्षणों का वर्णन शास्त्र में हुआ है। इसलिए यदि किसी में ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा वैश्य के लक्षण तथा गुण दिखते हैं और वह ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा वैश्य की वृत्ति अपनाता है, तो भले ही वह ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य कुल में उत्पन्न न हुआ हो, किन्तु उसे उसके गुणों तथा वृत्ति के अनुसार ऐसा माना जाना चाहिए।

इसी तरह *पद्म पुराण* में कहा गया है :

न शूद्रा भगवद्भक्तास्ते तु भागवता मताः।
सर्ववर्णेषु ते शूद्रा ये न भक्ता जनार्दने॥

"भक्त को कभी शूद्र नहीं माना जाना चाहिए। भगवान् के सारे भक्तों को

भागवत के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए। किन्तु यदि कोई कृष्ण-भक्त नहीं है, तो उसे ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य कुल में उत्पन्न होने पर भी शूद्र माना जाना चाहिए।"

पद्म पुराण में यह भी कहा गया है :

श्वपाकमिव नेक्षेत लोके विप्रमवैष्णवम्।
वैष्णवो वर्णोबाह्योऽपि पुनाति भुवनत्रयम्॥

"यदि ब्राह्मण कुल में उत्पन्न कोई व्यक्ति अवैष्णव है, अभक्त है, तो उसका मुँह भी नहीं देखना चाहिए—ठीक उसी तरह जिस तरह चण्डाल या श्वपच का मुख नहीं देखा जाता। किन्तु ब्राह्मण के अतिरिक्त अन्य वर्णों में जन्मा वैष्णव तीनों लोकों को पवित्र कर सकता है।"

पद्म पुराण में और आगे कहा गया है :

शूद्रं वा भगवद्भक्तं निषादं श्वपचं तथा।
वीक्षते जातिसामान्यात् स याति नरकं ध्रुवम्॥

"जो व्यक्ति शूद्रों, निषादों या चण्डालों के परिवार में उत्पन्न भगवद्भक्त को उस विशेष जाति का मानता है, वह निश्चय ही नरक जाता है।"

ब्राह्मण को वैष्णव तथा पण्डित होना चाहिए। इसीलिए भारत में ब्राह्मण को *पण्डित* कहकर सम्बोधित किया जाता है। ब्रह्म ज्ञान के बिना मनुष्य पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् को नहीं समझ सकता। इसलिए वैष्णव पहले से ब्राह्मण होता है, जबकि ब्राह्मण वैष्णव बन सकता है। *गरुड पुराण* में कहा गया है :

भक्तिरष्टविधा ह्येषा यस्मिन् म्लेच्छेऽपि वर्तते।
स विप्रेन्द्रो मुनिश्रेष्ठः स ज्ञानी स च पण्डितः॥

"यदि म्लेच्छ कुल में उत्पन्न व्यक्ति भी भक्त बन जाता है, तो उसे श्रेष्ठ ब्राह्मण तथा विद्वान पण्डित मानना चाहिए।"

इसी तरह *तत्त्व सागर* का कथन है :

यथा काञ्चनतां याति कांस्यं रसविधानतः।
तथा दीक्षाविधानेन द्विजत्वं जायते नृणाम्॥

"जिस तरह तकनीकी विधि से कांस में पारा मिलाने से वह सोना बन जाता है, उसी तरह प्रामाणिक गुरु द्वारा समुचित रीति से प्रशिक्षित तथा दीक्षित व्यक्ति

तुरन्त ब्राह्मण बन जाता है।" शास्त्रों में प्राप्त यह सारा प्रमाण यह सिद्ध करता है कि वैदिक उक्ति के अनुसार वैष्णव को कभी *अब्राह्मण* नहीं मानना चाहिए। वैष्णव को कभी भी निम्न जाति का नहीं मानना चाहिए, भले ही वह म्लेच्छ या यवन कुल में उत्पन्न क्यों न हुआ हो। कृष्ण भक्त बन जाने से वह शुद्ध हो जाता है और ब्राह्मण पद को प्राप्त कर लेता है (*द्विजत्वं जायते नृणाम्*)।

তারে নমস্করি' কালিদাস বিদায় মাগিলা ।
ঝড়ু-ঠাকুর তবে তাঁর অনুব্রজি' আইলা ॥৩০॥

तारे नमस्करि' कालिदास विदाय मागिला ।
झड़ु-ठाकुर तबे ताँर अनुव्रजि' आइला ॥ ३० ॥

तारे—उनको (झड़ु ठाकुर) को; **नमस्करि'**—नमस्कार किया; **कालिदास**—कालिदास; **विदाय मागिला**—जाने की अनुमति माँगी; **झड़ु-ठाकुर**—झड़ु ठाकुर; **तबे**—उसी समय; **ताँर**—उनके; **अनुव्रजि'**—पीछे; **आइला**—गये।

अनुवाद

कालिदास ने फिर से झड़ु ठाकुर को नमस्कार किया और उनसे जाने की अनुमति माँगी। उनके जाते ही सन्त झड़ु ठाकुर उनके पीछे गये।

তাঁরে বিদায় দিয়া ঠাকুর যদি ঘরে আইল ।
তাঁর চরণ-চিহ্ন যেই ঠাঞি পড়িল ॥৩১॥

ताँरे विदाय दिया ठाकुर यदि घरे आइल ।
ताँर चरण-चिह्न येइ ठाञि पड़िल ॥ ३१ ॥

ताँरे—उनको (कालिदास को); **विदाय दिया**—विदा कर दिया; **ठाकुर**—झड़ु ठाकुर; **यदि**—जब; **घरे आइल**—घर लौट आये; **ताँर चरण-चिह्न**—उनके पदचिह्न; **येइ ठाञि**—गिरे; **पड़िल**—जहाँ।

अनुवाद

कालिदास को विदा करने के बाद झड़ु ठाकुर अपने घर लौट आये और अनेक स्थानों पर अपने पदचिह्न छोड़ते आये, जो स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहे थे।

সেই ধূলি লঞা কালিদাস সর্বাঙ্গে লেপিলা ।
তাঁর নিকট এক-স্থানে লুকাঞা রহিলা ॥৩২॥

সেই ধূলি লঞা কালিদাস সর্বাঙ্গে লেপিলা ।
তাঁর নিকট এক-স্থানে লুকাঞা রহিলা ॥ ৩২॥

সেই ধূলি—वह धूल; **লঞা**—लेकर; **কালিদাস**—कालिदास; **সর্ব-অঙ্গে**—सारे शरीर पर; **লেপিলা**—लगा दी; **তাঁর নিকট**—उनके निकट के स्थान; **এক-স্থানে**—एक स्थान में; **লুকাঞা রহিলা**—छिपे रह गये।

अनुवाद

कालिदास ने उन चरणचिह्नों की धूल अपने सारे शरीर पर पोत ली। तब वे झडु ठाकुर के घर के निकट एक स्थान में छिप गये।

ঝড়ু-ঠাকুর ঘর যাই' দেখি' আম্র-ফল ।
মানসেই কৃষ্ণ-চন্দ্রে অর্পিলা সকল ॥৩৩॥

ঝড়ু-ঠাকুর ঘর য়াই' দেখি' আম্র-ফল ।
মানসেই কৃষ্ণ-চন্দ্রে অর্পিলা সকল ॥ ৩৩॥

ঝড়ু-ঠাকুর—झडु ठाकुर; **ঘর য়াই'**—घर लौट आये; **দেখি' আম্র-ফল**—आम को देखकर; **মানসেই**—मन ही मन; **কৃষ্ণ-চন্দ্রে**—कृष्ण को; **অর্পিলা**—अर्पित किया; **সকল**—सभी।

अनुवाद

घर लौटकर झडु ठाकुर ने कालिदास द्वारा भेंट किये गये आमों को देखा। उन्होंने मन ही मन उन्हें कृष्णचन्द्र को अर्पित कर दिया।

কলার পাটুয়া-খোলা হৈতে আম্র নিকাশিয়া ।
তাঁর পত্নী তাঁরে দেন, খায়েন চূষিয়া ॥৩৪॥

কলার পাটুয়া-খোলা হৈতে আম্র নিকাশিয়া ।
তাঁর পত্নী তাঁরে দেন, খায়েন চূষিয়া ॥ ৩৪॥

কলার—केले की पत्ती; **পাটুয়া-খোলা**—पत्तीयाँ और छाल; **হৈতে**—उसमें से; **আম্র**—आमों को; **নিকাশিয়া**—बाहर निकाला; **তাঁর পত্নী**—उनकी पत्नी; **তাঁরে**—उनको; **দেন**—दिया; **খায়েন**—खाने; **চূষিয়া**—चूसना।

अनुवाद

तब झडु ठाकुर की पत्नी ने केले की पत्ती तथा छाल से लपेटे आमों को निकाला और उन्हें झडु ठाकुर को दिया, जिन्होंने उनको चूसना प्रारम्भ कर दिया।

चूषि' चूषि' चोषा आँठि फेलिला पाटुयाते ।
तारे खाओयाञा ताँर पत्नी खाय पश्चाते ॥ ३५ ॥

चूषि' चूषि' चोषा आँठि फेलिला पाटुयाते ।
तारे खाओयाञा ताँर पत्नी खाय पश्चाते ॥ ३५ ॥

चूषि' चूषि'—चूसते चूसते; **चोषा**—चूसा; **आँठि**—गुठली; **फेलिला**—छोड़ दी; **पाटुयाते**—पत्ते पर; **तारे**—उनका; **खाओयाञा**—खिलाने के बाद; **ताँर पत्नी**—उनकी पत्नी; **खाय**—खाया; **पश्चाते**—उसने बाद।

अनुवाद

जब वे उन्हें चूस चुके, तो उन्होंने गुठली और छिलके को केले के पत्ते पर छोड़ दिया और उनकी पत्नी अपने पति को खिलाने के बाद स्वयं खाने लगी।

आँठि-चोषा सेइ पाटुया-खोलाते भरिया ।
बाहिरे उच्छिष्ट-गर्ते फेलाइला लञा ॥ ३६ ॥

आँठि-चोषा सेइ पाटुया-खोलाते भरिया ।
बाहिरे उच्छिष्ट-गर्ते फेलाइला लञा ॥ ३६ ॥

आँठि—गुठलियाँ; **चोषा**—चुस लेने पर; **सेइ**—वह; **पाटुया-खोलाते**—केले के पत्ते और छाल; **भरिया**—भरकर; **बाहिरे**—बाहर; **उच्छिष्ट-गर्ते**—कूड़ेदान में; **फेलाइला लञा**—उठाकर फेंक दिया।

अनुवाद

जब वह खा चुकी, तो उसने केले की पत्तों और छाल में गुठलियाँ तथा छिलके ले लिये और उन्हें ले जाकर कूड़ादान में फेंक दिया।

सेइ खोला, आँठि, चोकला चूषे कालिदास ।
चूषिते चूषिते हय प्रेमेते उल्लास ॥ ३७॥

सेइ खोला, आँठि, चोकला चूषे कालिदास ।
चूषिते चूषिते हय प्रेमेते उल्लास ॥ ३७॥

सेइ—वह; **खोला**—केले के पत्ते; **आँठि**—आम की गुठली; **चोकला**—आम के छिलके; **चूषे**—चूसे; **कालिदास**—कालिदास; **चूषिते चूषिते**—चूसते समय; **हय**—हो गये; **प्रेमेते उल्लास**—प्रसन्नता के मारे प्रेमाविष्ट।

अनुवाद

कालिदास ने केले के पत्ते तथा आम की गुठली और छिलके को चूसा। चूसते समय वे प्रसन्नता के मारे प्रेमाविष्ट हो गये।

एइ-मत यत वैष्णव वैसे गौड़-देशे ।
कालिदास ऐछे सबार निला अवशेषे ॥ ३८॥

एइ-मत यत वैष्णव वैसे गौड़-देशे ।
कालिदास ऐछे सबार निला अवशेषे ॥ ३८॥

एइ-मत—इस तरह; **यत**—जितने; **वैष्णव**—वैष्णवजन; **वैसे**—निवास करने वाले; **गौड़-देशे**—बंगाल में; **कालिदास**—कालिदास; **ऐछे**—इस तरह; **सबार**—उन सभी का; **निला**—खाया; **अवशेषे**—बचा हुआ।

अनुवाद

इस तरह कालिदास ने बंगाल में निवास करने वाले सारे वैष्णवों का जूठन खाया।

सेइ कालिदास यबे नीलाचले आइला ।
महाप्रभु ताँर उपर महा-कृपा कैला ॥ ३९॥

सेइ कालिदास यबे नीलाचले आइला ।
महाप्रभु ताँर उपर महा-कृपा कैला ॥ ३९॥

सेइ कालिदास—यही कालिदास; **यबे**—जब; **नीलाचले आइला**—जगन्नाथ पुरी आये; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँर उपर**—उन पर; **महा-कृपा**—महान् कृपा; **कैला**—की।

अनुवाद

जब यही कालिदास जगन्नाथपुरी अर्थात् नीलाचल आये, तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन पर महान् कृपा की।

প্রতি-দিন প্রভু যদি যা'ন দরশনে ।
জল-করঙ্গ লঞা গোবিন্দ যায় প্রভু-সনে ॥৪০॥

प्रति-दिन प्रभु यदि या'न दरशने ।
जल-करङ्ग लञा गोविन्द याय प्रभु-सने ॥४०॥

प्रति-दिन—प्रतिदिन; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **यदि**—जब; **या'न**—जाते; **दरशने**—भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने; **जल-करङ्ग**—पानी का पात्र; **लञा**—लेकर; **गोविन्द**—महाप्रभु का निजी सेवक (गोविन्द); **याय**—जाता; **प्रभु-सने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु प्रतिदिन नियमित रूप से जगन्नाथ जी के मन्दिर में दर्शन करने जाते और उस समय उनका निजी सेवक गोविन्द उनका कमण्डल लेकर उनके साथ-साथ जाता।

সিংহ-দ্বারের উত্তর-দিকে কপাটের আড়ে ।
বাইশ 'পাহাচ'-তলে আছে এক নিম্ন গাড়ে ॥৪১॥

सिंह-द्वारेर उत्तर-दिके कपाटेर आड़े ।
बाइश 'पाहाच'-तले आछे एक निम्न गाड़े ॥४१॥

सिंह-द्वारेर—सिंहद्वार की; **उत्तर-दिके**—उत्तर दिशा की ओर; **कपाटेर आड़े**—दरवाजे के पीछे; **बाइश पाहाच**—बाईस सीढ़ियाँ; **तले**—के नीचे; **आछे**—वहाँ है; **एक**—एक; **निम्न**—गहरा; **गाड़े**—गड्ढा।

अनुवाद

सिंहद्वार के उत्तर में, दरवाजे के पीछे से बाईस सीढ़ियाँ मन्दिर को जाती हैं और इन सीढ़ियों के नीचे एक गड्ढा है।

সেই গাড়ে করেন প্রভু পাদ-প্রক্ষালনে ।
তবে করিবারে যায় ঈশ্বর-দরশনে ॥৪২॥

सेइ गाड़े करेन प्रभु पाद-प्रक्षालने ।
तबे करिबारे याय ईश्वर-दरशने ॥ ४२ ॥

सेइ गाड़े—इस गड्ढे में; **करेन**—करते; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **पाद-प्रक्षालने**—पाँव धोते; **तबे**—उसके बाद; **करिबारे**—करते; **याय**—वे जाते; **ईश्वर-दरशने**—भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु इसी गड्ढे में अपने पाँव धोया करते और उसके बाद भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने मन्दिर में प्रवेश करते।

গোবিন্দেরে মহাপ্রভু কৈরাছে নিয়ম ।
'মোর পাদ-জল যেন না লয় কোন জন' ॥ ৪৩ ॥
गोविन्देरे महाप्रभु कैराछे नियम ।
'मोर पाद-जल येन ना लय कोन जन' ॥ ४३ ॥

गोविन्देरे—गोविन्द को; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कैराछे**—दिया; **नियम**—आदेश दिया; **मोर**—मेरे; **पाद-जल**—पाँव धोने वाले जल को; **येन**—वह; **ना लय**—न ले; **कोन जन**—कोई भी।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने सेवक गोविन्द को आदेश दे रखा था कि उनके पादप्रक्षालित जल को कोई न ले।

প্রাণি-মাত্র ল-ইতে না পায় সেই জল ।
অন্তরঙ্গ ভক্ত লয় করি' কোন ছল ॥ ৪৪ ॥
प्राणि-मात्र ल-इते ना पाय सेइ जल ।
अन्तरङ्ग भक्त लय करि' कोन छल ॥ ४४ ॥

प्राणि-मात्र—सभी प्राणी मात्र; **ल-इते**—लेने के लिए; **ना पाय**—न पाते; **सेइ जल**—वह पानी; **अन्तरङ्ग**—अत्यन्त अन्तरंग; **भक्त**—भक्त; **लय**—लेते; **करि'**—करने; **कोन छल**—कुछ उपाय से।

अनुवाद

महाप्रभु की सख्त आज्ञा के कारण कोई जीव यह जल नहीं ले सकता था। किन्तु उनके कुछ अन्तरंग भक्त किसी न किसी युक्ति से इसे ले लेते।

एक-दिन प्रभु তাঁহা পাদ প্রক্ষালিতে ।
কালিদাস আসি' তাহাঁ পাতিলেন হাতে ॥ ৪৫ ॥

एक-दिन प्रभु ताँहा पाद प्रक्षालिते ।
कालिदास आसि' ताहाँ पातिलेन हाते ॥ ४५ ॥

एक-दिन—एक दिन; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँहा**—वहाँ; **पाद प्रक्षालिते**—अपने पाँव धोने; **कालिदास**—कालिदास; **आसि'**—आये; **ताहाँ**—वहाँ; **पातिलेन**—फैलाये; **हाते**—अपनी हथेलियाँ।

अनुवाद

एक दिन जब श्री चैतन्य महाप्रभु उसी स्थान पर अपने पाँव धो रहे थे, तो कालिदास वहाँ आये और जल लेने के लिए अपनी अंजुली बढ़ाई।

এক অঞ্জলি, দুই অঞ্জলি, তিন অঞ্জলি পিলা ।
তবে মহাপ্রভু তাঁরে নিষেধ করিলা ॥ ৪৬ ॥

एक अञ्जलि, दुइ अञ्जलि, तिन अञ्जलि पिला ।
तबे महाप्रभु ताँरे निषेध करिला ॥ ४६ ॥

एक अञ्जलि—एक अँजुली भरकर; **दुइ अञ्जलि**—दूसरी अँजुली भरकर; **तिन अञ्जलि**—तीसरी अँजुली भरकर; **पिला**—उन्होंने पिया; **तबे**—उस समय; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—उन्हें; **निषेध करिला**—मना किया।

अनुवाद

कालिदास ने एक अँजुली पानी पिया, फिर दूसरी और तीसरी अंजुली भरकर भी पानी पिया। तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने और अधिक पीने से उन्हें मना कर दिया।

''অতঃপর আর না করিহ পুনর্বার ।
এতাবতা বাঞ্ছা-পূরণ করিলুঁ তোমার'' ॥ ৪৭ ॥

"अतःपर आर ना करिह पुनर्बार ।
एतावता वाञ्छा-पूरण करिलुँ तोमार" ॥ ४७॥

अतःपर—अब फिर; **आर**—फिर कभी; **ना करिह**—मत करना; **पुनः-बार**—फिर से; **एतावता**—यथासम्भव; **वाञ्छा-पूरण**—इच्छा पूरी; **करिलुँ**—मैंने की है; **तोमार**—तुम्हारी।

अनुवाद

"अब फिर से इस तरह मत करना। मैंने यथासम्भव तुम्हारी इच्छा पूरी कर दी है।"

सर्वज्ञ-शिरोमणि चैतन्य ईश्वर ।
वैष्णवे ताँहार विश्वास, जानेन अन्तर ॥ ४८॥

सर्वज्ञ-शिरोमणि चैतन्य ईश्वर ।
वैष्णवे ताँहार विश्वास, जानेन अन्तर ॥ ४८॥

सर्व-ज्ञ—सर्वज्ञ; **शिरोमणि**—सर्वश्रेष्ठ; **चैतन्य**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु; **ईश्वर**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्; **वैष्णवे**—वैष्णवों में; **ताँहार विश्वास**—उनकी श्रद्धा; **जानेन**—वे जान गये; **अन्तर**—मन में।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु सर्वश्रेष्ठ, सर्वज्ञ पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं। इसलिए वे जान गये कि कालिदास के अन्तर में वैष्णवों के प्रति पूरी श्रद्धा है।

सेई-गुण लञा प्रभु ताँरे तुष्ट ह-इला ।
अन्येर दुर्लभ प्रसाद ताँहारे करिला ॥ ४९॥

सेइ-गुण लञा प्रभु ताँरे तुष्ट ह-इला ।
अन्येर दुर्लभ प्रसाद ताँहारे करिला ॥ ४९॥

सेइ-गुण—इसी गुण; **लञा**—स्वीकार करके; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँरे**—उन्हें; **तुष्ट ह-इला**—तुष्ट किया; **अन्येर**—अन्य किसी ने; **दुर्लभ**—प्राप्त नहीं की; **प्रसाद**—कृपा; **ताँहारे**—उनको; **करिला**—दिखाया।

अनुवाद

इसी गुण के कारण श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें ऐसी कृपा से तुष्ट किया, जो अन्य किसी के लिए प्राप्त नहीं है।

বাইশ 'পাহাচ'-পাছে উপর দক্ষিণ-দিকে ।
এক নৃসিংহ-মূর্তি আছেন উঠিতে বাম-ভাগে ॥৫০॥

बाइश 'पाहाच'-पाछे उपर दक्षिण-दिके ।
एक नृसिंह-मूर्ति आछेन उठिते वाम-भागे ॥५०॥

बाइश पाहाच—बाईस सीढ़ियों; **पाछे**—के पीछे; **उपर**—ऊपर; **दक्षिण-दिके**—दक्षिण दिशा की ओर; **एक**—एक; **नृसिंह-मूर्ति**—भगवान् नृसिंह का विग्रह; **आछेन**—वहाँ पर; **उठिते**—ऊपर जाते हुए; **वाम-भागे**—वाम दिशा की ओर।

अनुवाद

दक्षिण दिशा में बाइस सीढ़ियों के पीछे ऊपर की ओर नृसिंह देव के अर्चाविग्रह हैं, जो सीढ़ियों से चढ़कर मन्दिर जाते समय बाँई ओर पड़ती है।

প্রতি-দিন তাঁরে প্রভু করেন নমস্কার ।
নমস্করি' এই শ্লোক পড়ে বার-বার ॥৫১॥

प्रति-दिन ताँरे प्रभु करेन नमस्कार ।
नमस्करि' एइ श्लोक पड़े बार-बार ॥५१॥

प्रति-दिन—प्रतिदिन; **ताँरे**—नृसिंह भगवान् को; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करेन**—करते; **नमस्कार**—नमस्कार; **नमस्करि'**—नमस्कार अर्पण; **एइ श्लोक**—इस श्लोक का; **पड़े**—पठन; **बार-बार**—बारम्बार।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु मन्दिर जाते समय अपने बाएँ पड़ने वाले नृसिंह भगवान् के अर्चाविग्रह को नमस्कार करते। नमस्कार करते समय वे बारम्बार निम्नलिखित श्लोक पढ़ते।

নমস্তে নর-সিংহায় প্রহ্লাদাহ্লাদ-দায়িনে ।
হিরণ্যকশিপোর্বক্ষঃ-শিলা-টঙ্ক-নখালয়ে ॥৫২॥

नमस्ते नर-सिंहाय प्रह्लादाह्लाद-दायिने ।
हिरण्यकशिपोर्वक्षः-शिला-टङ्क-नखालये ॥५२॥

नमः—मैं आपको मेरा सादर नमस्कार करता हूँ; **ते**—आपको; **नर-सिंहाय**—भगवान् नृसिंहदेव; **प्रह्लाद**—महाराज प्रह्लाद को; **आह्लाद**—आनन्द को; **दायिने**—देने वाले; **हिरण्यकशिपोः**—हिरण्यकशिपु के; **वक्षः**—वक्षस्थल; **शिला**—पत्थर की तरह; **टङ्क**—छेनी की तरह; **नख-आलये**—उनके नाखूनों ने।

अनुवाद

"'हे नृसिंहदेव, मैं आपको सादर नमस्कार करता हूँ। आप प्रह्लाद महाराज को हर्ष प्रदान करने वाले हैं। आपके नाखूनों ने हिरण्यकशिपु के वक्षस्थल को पत्थर काटने की छेनी के समान विदीर्ण कर डाला था।

तात्पर्य

यह श्लोक तथा अगला श्लोक *नृसिंह पुराण* से उद्धृत हैं।

इतो नृसिंहः परतो नृसिंहो
यतो यतो यामि ततो नृसिंहः ।
बहिर्नृसिंहो हृदये नृसिंहो
नृसिंहमादिं शरणं प्रपद्ये ॥५३॥

इतो नृसिंहः परतो नृसिंहो
यतो यतो यामि ततो नृसिंहः ।
बहिर्नृसिंहो हृदये नृसिंहो
नृसिंहमादिं शरणं प्रपद्ये ॥५३॥

इतः—यहाँ; **नृसिंहः**—भगवान् नृसिंह; **परतः**—उस ओर; **नृसिंहः**—भगवान् नृसिंह; **यतः यतः**—हर तरफ; **यामि**—मैं जाता हूँ; **ततः**—वहाँ; **नृसिंहः**—भगवान् नृसिंह; **बहिः**—बाहर; **नृसिंहः**—भगवान् नृसिंह; **हृदये**—मेरे हृदय में; **नृसिंहः**—भगवान् नृसिंह; **नृसिंहम्**—भगवान् नृसिंह; **आदिम्**—पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्; **शरणम् प्रपद्ये**—मैं शरण ग्रहण करता हूँ।

अनुवाद

"'इधर भगवान् नृसिंह हैं, उस ओर भी भगवान् नृसिंह हैं। मैं जहाँ भी जाता हूँ, वहाँ भगवान् नृसिंहदेव को देखता हूँ। वे मेरे हृदय के बाहर और भीतर हैं। इसलिए मैं आदि भगवान् नृसिंहदेव की शरण ग्रहण करता हूँ, जो कि पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं।"

তবে প্রভু করিলা জগন্নাথ দরশন ।
ঘরে আসি' মধ্যাহ্ন করি' করিল ভোজন ॥৫৪॥

तबे प्रभु करिला जगन्नाथ दरशन ।
घरे आसि' मध्याह्न करि' करिल भोजन ॥५४॥

तबे—इसके बाद; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करिला**—किया; **जगन्नाथ दरशन**—भगवान् जगन्नाथ का दर्शन; **घरे आसि'**—घर आने के बाद; **मध्याह्न करि'**—दोपहर के कृत्य करने के बाद; **करिल भोजन**—भोजन किया।

अनुवाद

भगवान् नृसिंहदेव को नमस्कार करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने भगवान् जगन्नाथ के मन्दिर में दर्शन किये। तब अपने घर आकर दोपहर के कृत्य करने के बाद उन्होंने भोजन किया।

বহির্দ্বারে আছে কালিদাস প্রত্যাশা করিয়া ।
গোবিন্দেরে ঠারে প্রভু কহেন জানিয়া ॥৫৫॥

बहिर्द्वारि आछे कालिदास प्रत्याशा करिया ।
गोविन्देरे ठारे प्रभु कहेन जानिया ॥५५॥

बहिः-द्वारे—दरवाजे के बाहर; **आछे**—था; **कालिदास**—कालिदास; **प्रत्याशा करिया**—आशा करते; **गोविन्देरे**—गोविन्द को; **ठारे**—संकेत से; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कहेन**—कहा; **जानिया**—जानते हुए।

अनुवाद

कालिदास श्री चैतन्य महाप्रभु के शेष प्रसाद की आशा में दरवाजे के बाहर खड़े थे। यह जानते हुए महाप्रभु ने गोविन्द को संकेत किया।

মহাপ্রভুর ইঙ্গিত গোবিন্দ সব জানে ।
কালিদাসেরে দিল প্রভুর শেষ-পাত্র-দানে ॥৫৬॥

महाप्रभुर इङ्गित गोविन्द सब जाने ।
कालिदासेरे दिल प्रभुर शेष-पात्र-दाने ॥५६॥

महाप्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **इङ्गित**—संकेतों को; **गोविन्द**—उनका निजी सेवक;

सब—सब; **जाने**—जानता; **कालिदासेरे**—कालिदास को; **दिल**—दिया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **शेष-पात्र**—बचा हुआ भोजन; **दाने**—प्रदान किया।

अनुवाद

गोविन्द श्री चैतन्य महाप्रभु के सारे संकेतों को जानता था। इसलिए उसने तुरन्त ही श्री चैतन्य महाप्रभु के भोजन का शेष प्रसाद कालिदास को दे दिया।

वैष्णवेर शेष-भक्षणेर एतेक महिमा ।
कालिदासे पाओयाइल प्रभुर कृपा-सीमा ॥५७॥

वैष्णवेर शेष-भक्षणेर एतेक महिमा ।
कालिदासे पाओयाइल प्रभुर कृपा-सीमा ॥५७॥

वैष्णवेर—वैष्णव के; **शेष-भक्षणेर**—बचा हुआ भोजन ग्रहण करने की; **एतेक महिमा**—इतना महत्त्व; **कालिदासे**—कालिदास; **पाओयाइल**—पाने पर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **कृपा-सीमा**—सर्वोच्च कृपा।

अनुवाद

वैष्णव के भोजन का शेष ग्रहण करना इतना महत्त्वपूर्ण है कि श्री चैतन्य महाप्रभु अपनी सर्वोच्च कृपा कालिदास पर अर्पित करने के लिए प्रेरित हुए।

तातेवैष्णवेर झुटा' खाओ छाड़ि' घृणा-लाज ।
याहा हैते पाइबा निज वाञ्छित सब काज ॥५८॥

तातेवैष्णवेर झुटा' खाओ छाड़ि' घृणा-लाज ।
याहा हैते पाइबा निज वाञ्छित सब काज ॥५८॥

तातेवैष्णवेर झुटा—वैष्णवों का बचा हुआ भोजन; **खाओ**—खाओ; **छाड़ि'**—छोड़कर; **घृणा-लाज**—घृणा तथा संकोच; **याहा हैते**—जिससे; **पाइबा**—तुम प्राप्त करोगे; **निज**—तुम्हारा स्वयं का; **वाञ्छित**—वांछित लक्ष्य; **सब**—सब; **काज**—सफलता।

अनुवाद

इसलिए घृणा तथा संकोच को त्यागकर वैष्णवों के भोजन का शेष

खाने का प्रयास करो, क्योंकि इस तरह से तुम्हें जीवन का वांछित लक्ष्य प्राप्त हो सकेगा।

কৃষ্ণের উচ্ছিষ্ট হয় 'মহা-প্রসাদ' নাম ।
'ভক্ত-শেষ' হৈলে 'মহা-মহা-প্রসাদাখ্যান' ॥৫৯॥

কৃষ্ণের উচ্ছিষ্ট হয় 'মহা-প্রসাদ' নাম ।
'ভক্ত-শেষ' হৈলে 'মহা-মহা-প্রসাদাখ্যান' ॥৫৯॥

कृष्णेर उच्छिष्ट—कृष्ण का बचा हुआ भोजन; **हय**—है; **महा-प्रसाद नाम**—महाप्रसाद कहा जाता है; **भक्त-शेष**—भक्तों का बचा हुआ भोजन; **हैले**—होता है; **महा-महा-प्रसाद**—महा महाप्रसाद; **आख्यान**—नामक।

अनुवाद

कृष्ण को अर्पित किये गये भोजन का शेष महाप्रसाद कहलाता है। और जब यह महाप्रसाद किसी भक्त द्वारा ग्रहण किया जाता है, तो यह शेष महा-महाप्रसाद बन जाता है।

ভক্ত-পদ-ধূলি আর ভক্ত-পদ-জল ।
ভক্ত-ভুক্ত-অবশেষ,—তিন মহা-বল ॥৬০॥

ভক্ত-পদ-ধূলি আর ভক্ত-পদ-জল ।
ভক্ত-ভুক্ত-অবশেষ,—তিন মহা-বল ॥৬০॥

भक्त-पद-धूलि—भक्त के चरणों की धूल; **आर**—और; **भक्त-पद-जल**—भक्त के चरणों का प्रक्षालित जल; **भक्त-भुक्त-अवशेष**—और भक्त द्वारा छोड़ा गया बचा हुआ भोजन; **तिन**—तीन; **महा-बल**—अत्यन्त शक्तिशाली।

अनुवाद

भक्त के चरणों की धूल, भक्त के चरणों का प्रक्षालित जल तथा भक्त द्वारा छोड़ा गया शेष भोजन—ये तीन अत्यन्त शक्तिशाली वस्तुएँ हैं।

এই তিন-সেবা হৈতে কৃষ্ণ-প্রেমা হয় ।
পুনঃ পুনঃ সর্ব-শাস্ত্রে ফুকারিয়া কয় ॥৬১॥

एइ तिन-सेवा हैते कृष्ण-प्रेमा हय ।
पुनः पुनः सर्व-शास्त्रे फुकारिया कय ॥ ६१ ॥

एइ तिन-सेवा—इन तीन की सेवा; **हैते**—से; **कृष्ण-प्रेम**—कृष्ण का प्रेम; **हय**—होता है; **पुनः पुनः**—बारम्बार; **सर्व-शास्त्रे**—सारे प्रामाणिक शास्त्रों में; **फु-कारिया कय**—पुकार पुकारकर घोषणा करते हैं।

अनुवाद

इन तीनों की सेवा से मनुष्य को कृष्ण-प्रेम का परम लक्ष्य प्राप्त होता है। सारे प्रामाणिक शास्त्रों में बारम्बार पुकार-पुकारकर इसकी घोषणा की गई है।

তাতে বার বার কহি,—শুন ভক্ত-গণ ।
বিশ্বাস করিয়া কর এ-তিন সেবন ॥ ৬২ ॥
তাতে বার বার কহি,—শুন ভক্ত-গণ ।
বিশ্বাস করিয়া কর এ-তিন সেবন ॥ ৬২ ॥

তাতে—इसलिए; **बार बार**—बारम्बार; **कहि**—मैं कहता हूँ; **शुन**—सुनो; **भक्त-गण**—हे भक्तों; **विश्वास करिया**—श्रद्धा रखो; **कर**—करो; **ए-तिन सेवन**—इन तीनों की सेवा।

अनुवाद

इसलिए हे प्रिय भक्तों, कृपया मुझसे यह सुन लो, क्योंकि मैं बारम्बार आग्रहपूर्वक कहता हूँ कि इन तीनों में श्रद्धा रखो और बिना संकोच के इनकी सेवा करो।

তিন হৈতে কৃষ্ণ-নাম-প্রেমের উল্লাস ।
কৃষ্ণের প্রসাদ, তাতে 'সাক্ষী' কালিদাস ॥ ৬৩ ॥
তিন হৈতে কৃষ্ণ-নাম-প্রেমের উল্লাস ।
কৃষ্ণের প্রসাদ, তাতে 'সাক্ষী' কালিদাস ॥ ৬৩ ॥

তিন হৈতে—इन तीनों से; **কৃষ্ণ-নাম**—भगवान् कृष्ण का पवित्र नाम; **প্রেমের উল্লাস**—प्रेम की जागृति; **কৃষ্ণের প্রসাদ**—भगवान् कृष्ण की दया; **তাতে**—उसमें; **সাক্ষী**—प्रमाण; **কালিদাস**—कालिदास।

अनुवाद

इन तीनों से मनुष्य को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य—कृष्ण-प्रेम—प्राप्त होता है। यह भगवान् कृष्ण की सबसे बड़ी कृपा है। कालिदास इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

নীলাচলে মহাপ্রভু রহে এই-মতে ।
কালিদাসে মহা-কৃপা কৈলা অলক্ষিতে ॥ ৬৪ ॥

नीलाचले महाप्रभु रहे एइ-मते ।
कालिदासे महा-कृपा कैला अलक्षिते ॥ ६४ ॥

नीलाचले—जगन्नाथ पुरी में; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **रहे**—रहे; **एइ-मते**—इस प्रकार; **कालिदासे**—कालिदास पर; **महा-कृपा**—महान् कृपा; **कैला**—प्रदान की; **अलक्षिते**—अप्रत्यक्ष रीति से।

अनुवाद

इस प्रकार श्री चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथपुरी अर्थात् नीलाचल में रहे और उन्होंने कालिदास पर अप्रत्यक्ष रीति से महती कृपा प्रदान की।

সে বৎসর শিবানন্দ পত্নী লঞা আইলা ।
'পুরী-দাস'-ছোট-পুত্রে সঙ্গেতে আনিলা ॥ ৬৫ ॥

से वत्सर शिवानन्द पत्नी लञा आइला ।
'पुरी-दास'-छोट-पुत्रे सङ्गेते आनिला ॥ ६५ ॥

से वत्सर—इस वर्ष; **शिवानन्द**—शिवानन्द सेन; **पत्नी**—पत्नी; **लञा**—लेकर; **आइला**—आये; **पुरी-दास**—पुरीदास; **छोट-पुत्रे**—सबसे छोटे पुत्र; **सङ्गेते आनिला**—वे अपने साथ ले आये।

अनुवाद

इस वर्ष शिवानन्द सेन अपने साथ अपनी पत्नी तथा अपने सबसे छोटे पुत्र पुरीदास को भी ले आये।

পুত্র সঙ্গে লঞা তেঁহো আইলা প্রভু-স্থানে ।
পুত্রেরে করাইলা প্রভুর চরণ বন্দনে ॥ ৬৬ ॥

पुत्र सङ्गे लञा तेंहो आइला प्रभु-स्थाने ।
पुत्रेरे कराइला प्रभुर चरण वन्दने ॥ ६६ ॥

पुत्र—पुत्र को; **सङ्गे**—साथ; **लञा**—लेकर; **तेंहो**—वे; **आइला**—आये; **प्रभु-स्थाने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के निवास पर; **पुत्रेरे**—उनके पुत्र को; **कराइला**—करवाया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **चरण वन्दने**—चरणकमलों पर सादर नमस्कार।

अनुवाद

शिवानन्द सेन अपने पुत्र को लेकर श्री चैतन्य महाप्रभु का दर्शन करने उनके निवास पर गये। उन्होंने अपने पुत्र से महाप्रभु के चरणकमलों पर सादर नमस्कार करवाया।

'कृष्ण कह' बलि' प्रभु बलेन बार बार ।
तबु कृष्ण-नाम बालक ना करे उच्चार ॥ ६७ ॥
'कृष्ण कह' बलि' प्रभु बलेन बार बार ।
तबु कृष्ण-नाम बालक ना करे उच्चार ॥ ६७ ॥

कृष्ण कह—कृष्ण कहो; **बलि'**—कहकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **बलेन**—बोले; **बार बार**—बारम्बार; **तबु**—फिर भी; **कृष्ण-नाम**—भगवान् कृष्ण के पवित्र नाम का; **बालक**—बालक; **ना करे उच्चार**—नामोच्चारण नहीं किया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उस बालक से कृष्ण नाम का उच्चारण करने के लिए बारम्बार कहा, किन्तु बालक ने पवित्र नाम का उच्चारण नहीं किया।

शिवानन्द बालकेरे बहु यत्न करिला ।
तबु सेइ बालक कृष्ण-नाम ना कहिला ॥ ६८ ॥
शिवानन्द बालकेरे बहु यत्न करिला ।
तबु सेइ बालक कृष्ण-नाम ना कहिला ॥ ६८ ॥

शिवानन्द—शिवानन्द सेन; **बालकेरे**—बालक से; **बहु**—बहुत; **यत्न**—प्रयत्न; **करिला**—किया; **तबु**—लेकिन; **सेइ बालक**—उस बालक ने; **कृष्ण-नाम**—कृष्ण के नाम का; **ना कहिला**—उच्चारण नहीं किया।

अनुवाद

यद्यपि शिवानन्द सेन ने उस बालक से कृष्ण के पवित्र नाम का उच्चारण करवाने का काफी प्रयास किया, किन्तु बालक ने नामोच्चारण नहीं किया।

प्रभु कहे,—"आमि नाम जगते लओयाइलुँ ।
स्थावरे पर्य्यन्त कृष्ण-नाम कहाइलुँ ॥ ६९॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **आमि**—मैं; **नाम**—पवित्र नाम; **जगते**—सारे जगत् में; **लओयाइलुँ**—लेने के लिए प्रेरित किया; **स्थावरे**—अचर; **पर्य्यन्त**—तक; **कृष्ण-नाम**—कृष्ण का पवित्र नाम; **कहाइलुँ**—कीर्तन के लिए प्रेरित किया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "मैंने तो सारे जगत् को कृष्ण नाम लेने के लिए प्रेरित किया। मैंने वृक्षों तथा अचर वनस्पतियों को भी पवित्र नाम का कीर्तन करने के लिए प्रेरित किया।

इहारे नारिलुँ कृष्ण-नाम कहाइते!" ।
शुनिया स्वरूप-गोसाञि लागिला कहिते ॥ ७०॥

इहारे—यह बालक; **नारिलुँ**—मैं नहीं कर सका; **कृष्ण-नाम**—कृष्ण का पवित्र नाम; **कहाइते**—कहने के लिए; **शुनिया**—सुनकर; **स्वरूप-गोसाञि**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **लागिला**—लगे; **कहिते**—कहने।

अनुवाद

"किन्तु मैं इस बालक से कृष्ण नाम नहीं कहलवा सका।" यह सुनकर स्वरूप दामोदर गोस्वामी कहने लगे।

"'तुमि कृष्ण-नाम-मन्त्र कैला उपदेशे ।
मन्त्र पाञा का'र आगे ना करे प्रकाशे ॥७१॥

"तुमि कृष्ण-नाम-मन्त्र कैला उपदेशे ।
मन्त्र पाञा का'र आगे ना करे प्रकाशे ॥७१॥

तुमि—आप; **कृष्ण-नाम**—कृष्ण का पवित्र नाम; **मन्त्र**—यह मन्त्र; **कैला उपदेशे**—उपदेश दिया है; **मन्त्र पाञा**—मन्त्र प्राप्त किया; **का'र आगे**—सबों के आगे; **ना करे प्रकाशे**—व्यक्त नहीं करेगा।

अनुवाद

उन्होंने कहा, "हे प्रभु, आप उसे कृष्ण नाम में दीक्षित कर चुके हैं। किन्तु मन्त्र प्राप्त करने के बाद वह सबों के समक्ष उसे व्यक्त नहीं करेगा।

मने मने जपे, मुखे ना करे आख्यान ।
एइ इहार मनः-कथा——करि अनुमान'' ॥७२॥

मने मने जपे, मुखे ना करे आख्यान ।
एइ इहार मनः-कथा——करि अनुमान" ॥७२॥

मने मने—मन ही मन में; **जपे**—जप करता है; **मुखे**—मुँह में; **ना करे आख्यान**—व्यक्त नहीं करता; **एइ**—उसका; **इहार**—वह; **मनः-कथा**—मनोभाव; **करि अनुमान**—मेरा अनुमान।

अनुवाद

"यह बालक मन ही मन मन्त्र का जप करता है, उसे उच्च स्वर से नहीं कहता। जहाँ तक मेरा अनुमान है, यही उसका मनोभाव है।"

आर दिन कहेन प्रभु,——'पड़, पुरी-दास' ।
एइ श्लोक करि' तेँहो करिला प्रकाश ॥७३॥

आर दिन कहेन प्रभु,——'पड़, पुरी-दास' ।
एइ श्लोक करि' तेंहो करिला प्रकाश ॥७३॥

आर दिन—अन्य दिन; **कहेन प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **पड़**—वर्णन करो; **पुरी-दास**—पुरीदास; **एइ**—यह; **श्लोक**—श्लोक; **करि'**—बनाकर; **तेंहो**—उसने; **करिला प्रकाश**—व्यक्त किया।

अनुवाद

एक अन्य दिन जब महाप्रभु ने उस बालक से कहा, "हे पुरीदास, तुम सुनाओ।" तो उसने निम्नलिखित श्लोक बनाकर सबों के सामने व्यक्त किया।

श्रवसोः कुवलयमक्ष्णोर्
अञ्जनमुरसो महेन्द्र-मणि-दाम ।
वृन्दावन-रमणीनां
मण्डनमखिलं हरिर्जयति ॥७४॥

श्रवसोः कुवलयमक्ष्णोर्
अञ्जनमुरसो महेन्द्र-मणि-दाम ।
वृन्दावन-रमणीनां
मण्डनमखिलं हरिर्जयति ॥७४॥

श्रवसोः—दो कानों का; **कुवलयम्**—नीलकमल; **अक्ष्णोः**—दो आँखों का; **अञ्जनम्**—अंजन; **उरसः**—वक्षस्थल का; **महेन्द्र-मणि-दाम**—इन्दनील रत्नों का हार; **वृन्दावन-रमणीनाम्**—वृन्दावन की गोपियों के; **मण्डनम्**—आभूषण; **अखिलम्**—सब; **हरिः जयति**—भगवान् श्रीकृष्ण की जय हो।

अनुवाद

"श्रीकृष्ण वृन्दावन की गोपांगनाओं के कानों के लिए नीले कमल के फूल के तुल्य हैं। वे आँखों के अंजन हैं, वक्षस्थल के लिए इन्द्रनीलमणि की माला हैं और उनके आभूषण हैं। उन भगवान् श्री हरि, कृष्ण की जय हो।"

सात वत्सरेर शिशु, नाहि अध्ययन ।
ऐछे श्लोक करे,—लोकेर चमत्कार मन ॥७५॥

सात वत्सरेर शिशु, नाहि अध्ययन ।
ऐछे श्लोक करे,—लोकेर चमत्कार मन ॥७५॥

सात वत्सरेर—सात वर्ष का; **शिशु**—बालक; **नाहि अध्ययन**—कोई शिक्षा बिना; **ऐछे**—उसे; **श्लोक**—श्लोक; **करे**—रचा; **लोकेर**—सभी व्यक्ति; **चमत्कार**—आश्चर्यचकित; **मन**—मन।

अनुवाद

यद्यपि वह बालक केवल सात वर्ष का था और उसे कोई शिक्षा नहीं मिली थी, फिर भी उसने इतना अच्छा श्लोक रचा। इससे हर व्यक्ति आश्चर्यचकित हो गया।

चैतन्य-प्रभुर एइ कृपार महिमा ।
ब्रह्मादि देव यार नाहि पाय सीमा ॥७६॥

चैतन्य-प्रभुर एइ कृपार महिमा ।
ब्रह्मादि देव यार नाहि पाय सीमा ॥७६॥

चैतन्य-प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **एइ**—यह; **कृपार महिमा**—कृपा की महिमा; **ब्रह्मा-आदि**—ब्रह्माजी इत्यादि; **देव**—देवतागण; **यार**—जिसका; **नाहि पाय**—नहीं पाया; **सीमा**—सीमा।

अनुवाद

यह श्री चैतन्य महाप्रभु की अहैतुकी कृपा की महिमा ही है, जिसका अनुमान ब्रह्माजी एवं देवतागण भी नहीं लगा सकते।

भक्त-गण प्रभु-सङ्गे रहे चारि-मासे ।
प्रभु आज्ञा दिला सबे गेला गौड़-देशे ॥७७॥

भक्त-गण प्रभु-सङ्गे रहे चारि-मासे ।
प्रभु आज्ञा दिला सबे गेला गौड़-देशे ॥७७॥

भक्त-गण—सारे भक्त; **प्रभु-सङ्गे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ; **रहे**—रहे; **चारि-मासे**—चार महीने; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **आज्ञा दिला**—आज्ञा दी; **सबे**—सबको; **गेला**—लौट गये; **गौड़-देशे**—बंगाल को।

अनुवाद

सारे भक्त लगातार चार महीने श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ रहे। तब महाप्रभु ने उन्हें बंगाल लौट जाने की आज्ञा दी। इसलिए वे लौट गये।

ताँ-सबार सङ्गे प्रभुर छिल बाह्य-ज्ञान ।
ताँरा गेले पुनः हैला उन्माद प्रधान ॥७८॥

ताँ-सबार सङ्गे प्रभुर छिल बाह्य-ज्ञान ।
ताँरा गेले पुनः हैला उन्माद प्रधान ॥ ७८ ॥

ताँ-सबार—ये सभी; **सङ्गे**—साथ; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **छिल**—हो गई; **बाह्य-ज्ञान**—बाह्य चेतना; **ताँरा गेले**—जब वे गये; **पुनः**—फिर से; **हैला**—हो गया; **उन्माद**—उन्माद; **प्रधान**—प्रधान कार्य।

अनुवाद

जब तक ये भक्त नीलाचल अर्थात् जगन्नाथपुरी में रहे, श्री चैतन्य महाप्रभु ने बाह्य चेतना बनाए रखी, किन्तु उनके जाते ही महाप्रभु पुनः कृष्ण-प्रेम के उन्माद में खो गये।

रात्रि-दिने स्फुरे कृष्णेर रूप-गन्ध-रस ।
साक्षादनुभवे,—येन कृष्ण-उपस्पर्श ॥७९॥
रात्रि-दिने स्फुरे कृष्णेर रूप-गन्ध-रस ।
साक्षादनुभवे,—येन कृष्ण-उपस्पर्श ॥ ७९ ॥

रात्रि-दिने—रात और दिन; **स्फुरे**—की स्फूरणा होती थी; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण का; **रूप**—सौन्दर्य; **गन्ध**—सुगन्ध; **रस**—रस; **साक्षात्-अनुभवे**—प्रत्यक्ष अनुभव करना; **येन**—जैसे; **कृष्ण-उपस्पर्श**—कृष्ण का प्रत्यक्ष स्पर्श।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु रात-दिन कृष्ण के सौन्दर्य, सुगन्ध तथा रस का प्रत्यक्ष आस्वादन करने लगे, मानो वे कृष्ण का प्रत्यक्ष स्पर्श कर रहे हों।

एक-दिन प्रभु गेला जगन्नाथ-दरशने ।
सिंह-द्वारे दल-इ आसि' करिल वन्दने ॥८०॥
एक-दिन प्रभु गेला जगन्नाथ-दरशने ।
सिंह-द्वारे दल-इ आसि' करिल वन्दने ॥ ८० ॥

एक-दिन—एक दिन; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **गेला**—गये; **जगन्नाथ-दरशने**—भगवान् जगन्नाथ के दर्शन के लिए; **सिंह-द्वारे**—सिंहद्वार नामक द्वार के; **दल-इ**—द्वारपाल; **आसि'**—आकर; **करिल वन्दने**—नमस्कार किया।

अनुवाद

एक दिन जब श्री चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथजी के मन्दिर में दर्शन के लिए गये, तो सिंहद्वार के द्वारपाल ने उनके पास पहुँचकर उन्हें नमस्कार किया।

तारे वले,—'कोथा कृष्ण, मोर प्राण-नाथ? ।
मोरे कृष्ण देखाओ' वलि' धरे तार हात ॥८१॥

तारे बले,—'कोथा कृष्ण, मोर प्राण-नाथ? ।
मोरे कृष्ण देखाओ' बलि' धरे तार हात ॥८१॥

तारे—उनको; **बले**—कहा; **कोथा कृष्ण**—कृष्ण कहाँ हैं; **मोर**—मेरे; **प्राण-नाथ**—प्राणनाथ; **मोरे**—मुझे; **कृष्ण देखाओ**—कृपया कृष्ण दिखलाओ; **बलि'**—कहकर; **धरे**—पकड़कर; **तार**—उनका; **हात**—हाथ।

अनुवाद

महाप्रभु ने उससे पूछा, "मेरे प्राणनाथ कृष्ण कहाँ हैं? मुझे कृष्ण दिखलाओ।" यह कहकर उन्होंने द्वारपाल का हाथ पकड़ लिया।

सेह कहे,—'इँहा हय व्रजेन्द्र-नन्दन ।
आइस तुमि मोर सङ्गे, कराओ दरशन' ॥८२॥

सेह कहे,—'इँहा हय व्रजेन्द्र-नन्दन ।
आइस तुमि मोर सङ्गे, कराङ दरशन' ॥८२॥

सेह कहे—उसने कहा; **इँहा**—यहाँ; **हय**—हैं; **व्रजेन्द्र-नन्दन**—नन्द महाराज के पुत्र; **आइस**—आओ; **तुमि**—आप; **मोर सङ्गे**—मेरे साथ; **कराङ दरशन**—मैं दिखाऊँगा।

अनुवाद

द्वारपाल ने उत्तर दिया, "महाराज नन्द के पुत्र यहीं हैं। कृपया मेरे साथ आयें। मैं आपको दर्शन करा दूँगा।"

'तुमि मोर सखा, देखाह—काहाँ प्राण-नाथ?' ।
एत वलि' जगमोहन गेला धरि' तार हात ॥८३॥

'तुमि मोर सखा, देखाह—काहाँ प्राण-नाथ?' ।
एत बलि' जगमोहन गेला धरि' तार हात ॥ ८३ ॥

तुमि—तुम; **मोर सखा**—मेरे मित्र; **देखाह**—कृपया दिखाओ; **काहाँ**—कहाँ; **प्राण-नाथ**—मेरे हृदय के स्वामी; **एत बलि'**—यह कहकर; **जगमोहन**—जगमोहन को; **गेला**—गये; **धरि'**—पकड़कर; **तार**—उसका; **हात**—हाथ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने द्वारपाल से कहा : "तुम मेरे मित्र हो। कृपया मुझे मेरे हृदय के स्वामी को दिखला दो।" इतना कहने के बाद वे दोनों जगमोहन नामक स्थान पर गये, जहाँ सभी लोग भगवान् जगन्नाथ का दर्शन पाते हैं।

सेह बले,—'एई देख श्री-पुरुषोत्तम ।
नेत्र भरिया तुमि करह दरशन' ॥ ८४ ॥
सेह बले,—'एइ देख श्री-पुरुषोत्तम ।
नेत्र भरिया तुमि करह दरशन' ॥ ८४ ॥

सेह बले—वह बोला; **एइ**—यह; **देख**—देखो; **श्री-पुरुष-उत्तम**—भगवान् श्रीकृष्ण, पुरुषोत्तम भगवान्; **नेत्र भरिया**—आपकी आँखे भरकर; **तुमि**—आप; **करह दरशन**—दर्शन कर लो।

अनुवाद

द्वारपाल ने कहा, "वह देखो, श्री पुरुषोत्तम वहाँ हैं! यहाँ से आप जी भरकर भगवान् का दर्शन कर सकते हैं।"

गरुड़ेर पाछे रहि' करेन दरशन ।
देखेन,—जगन्नाथ हय मुरली-वदन ॥ ८५ ॥
गरुड़ेर पाछे रहि' करेन दरशन ।
देखेन,—जगन्नाथ हय मुरली-वदन ॥ ८५ ॥

गरुड़ेर पाछे—गरुड़ स्तम्भ के पीछे; **रहि'**—रहकर; **करेन दरशन**—दर्शन कर रहे थे; **देखेन**—उन्होंने देखा; **जगन्नाथ**—भगवान् जगन्नाथ; **हय**—थे; **मुरली-वदन**—भगवान् कृष्ण अपने मुख में वंशी लिये।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु गरुड़ स्तम्भ के पीछे खड़े रहे और उन्होंने वहाँ से जगन्नाथ जी को देखा। किन्तु जैसे ही उन्होंने देखा, जगन्नाथ जी भगवान् कृष्ण बन गये, जो अपने मुख में वंशी धारण किये थे।

এই লীলা নিজ-গ্রন্থে রঘুনাথ-দাস ।
'গৌরাঙ্গ-স্তব-কল্পবৃক্ষে' করিয়াছেন প্রকাশ ॥ ৮৬॥

এइ লীলা নিজ-গ্রন্থে রঘুনাথ-দাস ।
'গৌরাঙ্গ-স্তব-কল্পবৃক্ষে' করিয়াছেন প্রকাশ ॥ ৮৬॥

এइ লীলা—यह लीला; **নিজ-গ্রন্থে**—अपने ग्रन्थ में; **রঘুনাথ-দাস**—रघुनाथ दास गोस्वामी; **গৌরাঙ্গ-স্তব-কল্প-বৃক্ষে**—गौरांगस्तव कल्पवृक्ष; **করিয়াছেন প্রকাশ**—वर्णन किया है।

अनुवाद

रघुनाथ दास गोस्वामी ने अपनी पुस्तक 'गौरांगस्तव कल्पवृक्ष' में इस घटना का बहुत सुन्दर वर्णन किया है।

ক্ব মে কান্তঃ কৃষ্ণস্ত্বরিতমিহ তং লোকয় সখে
ত্বমেবেতি দ্বারাধিপমভিবদন্নুন্মদ ইব ।
দ্রুতং গচ্ছ দ্রষ্টুং প্রিয়মিতি তদুক্তেন ধৃত-তদ্
ভুজান্তর্গৌরাঙ্গো হৃদয় উদয়ন্মাং মদয়তি ॥ ৮৭॥

ক্ব মে কান্তঃ কৃষ্ণস্ত্বরিতমিহ তং লোকয় সখে
ত্বমেবেতি দ্বারাধিপমভিবদন্নুন্মদ ইব ।
দ্রুতং গচ্ছ দ্রষ্টুং প্রিয়মিতি তদুক্তেন ধৃত-তদ্
ভুজান্তর্গৌরাঙ্গো হৃদয় উদয়ন্মাং মদয়তি ॥ ৮৭॥

ক্ব—कहाँ; **মে**—मेरे; **কান্তঃ**—प्राणनाथ; **কৃষ্ণঃ**—भगवान् कृष्ण; **ত্বরিতম্**—जल्दी; **ইহ**—यहाँ; **তম্**—उनको; **লোকয়**—दिखाओ; **সখে**—हे मित्र; **ত্বম্**—तुम; **এব**—निश्चय ही; **ইতি**—इस प्रकार; **দ্বার-অধিপম্**—द्वारपाल; **অভিবদন্**—विनति करके; **উন্মদঃ**—उन्मत्त व्यक्ति; **ইব**—जैसे; **দ্রুতম্**—जल्दी; **গচ্ছ**—आओ; **দ্রষ্টুম্**—देखने; **প্রিয়ম্**—प्रिय; **ইতি**—इस प्रकार; **তত্**—उनका; **উক্তেন**—शब्दों से; **ধৃত**—पकड़े; **তত্**—उनके; **ভুজ-অন্তঃ**—हाथ;

गौराङ्गः—श्री चैतन्य महाप्रभु; **हृदये**—मेरे हृदय में; **उदयन्**—उदय; **माम्**—मेरे; **मदयति**—उन्मत्त।

अनुवाद

"'हे द्वारपाल, हे मेरे मित्र, मेरे प्राणधन कृष्ण कहाँ हैं? मुझे उनका दर्शन शीघ्रता से कराओ।' श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्मत्त की तरह उस द्वारपाल को इन शब्दों से सम्बोधित किया। द्वारपाल ने उनका हाथ पकड़कर शीघ्रता में उत्तर दिया, 'आइये, आप अपने प्रियतम को देखिये!' वे श्री चैतन्य महाप्रभु मेरे हृदय में उदय हों और मुझे भी उन्मत्त बनायें।"

হেন-কালে 'গোপাল-বল্লভ'-ভোগ লাগাইল ।
শঙ্খ-ঘণ্টা-আদি সহ আরতি বাজিল ॥৮৮॥

হেন-কালে 'গোপাল-বল্লভ'-ভোগ লাগাইল ।
শঙ্খ-ঘণ্টা-আদি সহ আরতি বাজিল ॥৮৮॥

হেন-কালে—इस समय; **গোপাল-বল্লভ-ভোগ**—गोपाल वल्लभ भोग नामक भोजन; **লাগাইল**—अर्पित किया; **শঙ্খ**—शंख; **ঘণ্টা-আদি**—घण्टा आदि; **সহ**—के साथ; **আরতি**—आरति; **বাজিল**—आवाज आ रही थी।

अनुवाद

तभी भगवान् जगन्नाथ को गोपाल वल्लभ भोग नामक भोजन अर्पित किया जा रहा था और शंख ध्वनि तथा घंटे की ध्वनि के साथ आरती की जा रही थी।

ভোগ সরিলে জগন্নাথের সেবক-গণ ।
প্রসাদ লঞা প্রভু-ঠাঞি কৈল আগমন ॥৮৯॥

ভোগ সরিলে জগন্নাথের সেবক-গণ ।
প্রসাদ লঞা প্রভু-ঠাঞি কৈল আগমন ॥৮৯॥

ভোগ সরিলে—प्रसाद बाहर ले जाया जा रहा था; **জগন্নাথের**—भगवान् जगन्नाथ के; **সেবক-গণ**—सेवकगण; **প্রসাদ লঞা**—प्रसाद लेकर; **প্রভু-ঠাঞি**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु के पास; **কৈল আগমন**—देने आये।

अनुवाद

जब आरती समाप्त हो गई, तो प्रसाद बाहर लाया गया और भगवान् जगन्नाथ के सेवकगण कुछ प्रसाद लेकर श्री चैतन्य महाप्रभु को देने आये।

माला पराञा प्रसाद दिल प्रभुर हाते ।
आस्वाद दूरे रहु, यार गन्धे मन माते ॥९०॥

माला पराञा प्रसाद दिल प्रभुर हाते ।
आस्वाद दूरे रहु, यार गन्धे मन माते ॥ ९० ॥

माला पराञा—माला पहनाकर; **प्रसाद**—भगवान् जगन्नाथजी का बचा हुआ भोजन; **दिल**—दिया; **प्रभुर हाते**—श्री चैतन्य महाप्रभु के हाथ में; **आस्वाद**—स्वाद की; **दूरे रहु**—बात छोड़ दो; **यार**—जिसकी; **गन्धे**—सुगन्ध से; **मन**—मन; **माते**—उन्मत्त हो जाता है।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ के सेवकों ने सर्वप्रथम श्री चैतन्य महाप्रभु को माला पहनाई और तब उन्हें जगन्नाथ जी का प्रसाद दिया। यह प्रसाद इतना अच्छा था कि स्वाद की बात छोड़ दें, इसकी सुगन्ध ही मन को उन्मत्त बनाने वाली थी।

बहु-मूल्य प्रसाद सेइ वस्तु सर्वोत्तम ।
तार अल्प खाओयाइते सेवक करिल यतन ॥९१॥

बहु-मूल्य प्रसाद सेइ वस्तु सर्वोत्तम ।
तार अल्प खाओयाइते सेवक करिल यतन ॥ ९१ ॥

बहु-मूल्य—अत्यन्त मूल्यवान; **प्रसाद**—बचा हुआ भोजन; **सेइ**—वह; **वस्तु**—सामग्री; **सर्व-उत्तम**—सर्वोत्तम; **तार**—उसका; **अल्प**—थोड़ासा भी; **खाओयाइते**—खिलाना; **सेवक**—सेवक; **करिल यतन**—प्रयत्न करते थे।

अनुवाद

यह प्रसाद बहुमूल्य वस्तुओं से बना हुआ था। इसलिए सेवकगण उसका थोड़ा-सा अंश श्री चैतन्य महाप्रभु को खिलाना चाह रहे थे।

তার অল্প লঞা প্রভু জিহ্বাতে যদি দিলা ।
আর সব গোবিন্দের আঁচলে বান্ধিলা ॥৯২॥

तार अल्प लञा प्रभु जिह्वाते यदि दिला ।
आर सब गोविन्देर आँचले बान्धिला ॥ ९२ ॥

तार—उसका; **अल्प**—अत्यन्त थोड़ासा; **लञा**—लेकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **जिह्वाते**—जिह्वा पर; **यदि**—जब; **दिला**—रखा; **आर सब**—बचा हुआ; **गोविन्देर**—गोविन्द ने; **आँचले**—वस्त्र के छोर में; **बान्धिला**—बाँध लिया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने प्रसाद का थोड़ा अंश चखा। शेष भाग गोविन्द ने अपने वस्त्र के छोर में बाँध लिया।

কোটি-অমৃত-স্বাদ পাঞা প্রভুর চমৎকার ।
সর্বাঙ্গে পুলক, নেত্রে বহে অশ্রু-ধার ॥৯৩॥

कोटि-अमृत-स्वाद पाञा प्रभुर चमत्कार ।
सर्वाङ्गे पुलक, नेत्रे वहे अश्रु-धार ॥ ९३ ॥

कोटि—करोड़ों से करोड़ों गुना; **अमृत**—अमृत; **स्वाद**—स्वाद; **पाञा**—पाया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **चमत्कार**—पूर्णतया तुष्ट होना; **सर्व-अङ्गे**—संपूर्ण शरीर में; **पुलक**—रोमांच हुआ; **नेत्रे**—आँखों से; **वहे**—बहने लगी; **अश्रु-धार**—अश्रुधारा।

अनुवाद

यह प्रसाद श्री चैतन्य महाप्रभु को अमृत से करोड़ों गुना अधिक स्वादिष्ट लगा, अतएव वे पूर्णतया तुष्ट हो गये। उन्हें रोमांच हो आया और उनके नेत्रों से अविरत अश्रुधारा बहने लगी।

'এই দ্রব্যে এত স্বাদ কাহাঁ হৈতে আইল? ।
কৃষ্ণের অধরামৃত ইথে সঞ্চারিল' ॥৯৪॥

'एइ द्रव्ये एत स्वाद काहाँ हैते आइल? ।
कृष्णेर अधरामृत इथे सञ्चारिल' ॥ ९४ ॥

एइ द्रव्ये—इन सामग्री में; **एत**—इतना; **स्वाद**—स्वाद; **काहाँ**—कहाँ; **हैते**—से;

आइल—आया; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण के; **अधर-अमृत**—होठों के अमृत के स्पर्श से; **इथे**—ऐसा; **सञ्चारिल**—हुआ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने विचार किया, "इस प्रसाद में ऐसा स्वाद कहाँ से आया? निश्चय ही कृष्ण के होठों के अमृत के स्पर्श से ऐसा हुआ है।"

এই বুদ্ধ্যে মহাপ্রভুর প্রেমাবেশ হৈল ।
জগন্নাথের সেবক দেখি' সম্বরণ কৈল ॥ ৯৫ ॥

এइ বুদ্ধ্যে মহাপ্রভুর প্রেমাবেশ হৈল ।
জগন্নাথের সেবক দেখি' সম্বরণ কৈল ॥ ৯৫ ॥

এइ বুদ্ধ্যে—यह समझकर; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **प्रेम-आवेश**—प्रेमावेश; **हैल**—हुआ; **जगन्नाथेर**—भगवान् जगन्नाथ के; **सेवक**—सेवकों को; **देखि'**—देखकर; **सम्वरण कैल**—अपने आपको सँभाला।

अनुवाद

यह समझकर श्री चैतन्य महाप्रभु को कृष्ण के प्रेमावेश का अनुभव हुआ, किन्तु भगवान् जगन्नाथ के सेवकों को देखकर उन्होंने अपने आपको सँभाला।

'सुकृति-लभ्य फेला-लव'—बलेन बार-बार ।
ईश्वर-सेवक पूछे,—'कि अर्थ इहार'? ॥ ९६ ॥

'सुकृति-लभ्य फेला-लव'—बलेन बार-बार ।
ईश्वर-सेवक पुछे,—'कि अर्थ इहार'? ॥ ९६ ॥

सुकृति—बड़े सौभाग्य से; **लभ्य**—मिल सकने वाला; **फेला-लव**—बचे हुए का कण; **बलेन**—कहते हैं; **बार-बार**—बारम्बार; **ईश्वर-सेवक**—जगन्नाथ के सेवक; **पुछे**—पूछा; **कि**—क्या; **अर्थ**—अर्थ; **इहार**—इसका।

अनुवाद

महाप्रभु बारम्बार कहते रहे, "बहुत ही सौभाग्य से भगवान् को अर्पित प्रसाद का एक कण मिल पाता है।" जगन्नाथ मन्दिर के सेवकों ने पूछा, "इसका अर्थ क्या है?"

तात्पर्य

कृष्ण के भोजन के शेष में उनका लार मिला रहता है। *महाभारत* तथा *स्कन्द पुराण* में कहा गया है :

महाप्रसादे गोविन्दे नामब्रह्मणि वैष्णवे।
स्वल्पपुण्यवतां राजन् विश्वासो नैव जायते॥

"जिन लोगों ने अधिक पुण्य कर्म नहीं किये हैं, वे न तो भगवान् के प्रसाद (भोजन के शेष) में विश्वास करते हैं, न भगवान् के गोविन्द नाम में, न ही वैष्णवों में।"

प्रभु कहे,—"एइ ये दिला कृष्णाधरामृत ।
ब्रह्मादि-दुर्लभ एइ निन्दये 'अमृत' ॥९७॥

प्रभु कहे,—"एइ ये दिला कृष्णाधरामृत ।
ब्रह्मादि-दुर्लभ एइ निन्दये 'अमृत' ॥९७॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **एइ**—यह; **ये**—जो; **दिला**—आपने दिया है; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण का; **अधर-अमृत**—होठों के अमृत से; **ब्रह्मा-आदि**—ब्रह्मा जैसे देवताओं के लिए; **दुर्लभ**—पाना दुर्लभ; **एइ**—यह; **निन्दये**—परास्त करता है; **अमृत**—अमृत।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया, "ये कृष्ण द्वारा किये गये भोजन के शेष हैं, अतएव उनके होठों के स्पर्श से अमृत में परिणत हो गये हैं। यह स्वर्गिक अमृत से बढ़कर है और ब्रह्मा जैसे देवताओं के लिए भी दुर्लभ है।

कृष्णेर ये भुक्त-शेष, तार 'फेला'-नाम ।
तार एक 'लव' ये पाय, सेइ भाग्यवान् ॥९८॥

कृष्णेर ये भुक्त-शेष, तार 'फेला'-नाम ।
तार एक 'लव' ये पाय, सेइ भाग्यवान् ॥९८॥

कृष्णेर—भगवान् कृष्ण का; **ये**—जो भी; **भुक्त-शेष**—बचा हुआ भोजन; **तार**—उसका;

फेला-नाम—फेला नाम का; **तार**—उसका; **एक**—एक; **लव**—अल्पांश; **ग्रे**—जो कोई; **पाय**—पाता है; **सेइ**—वह; **भाग्यवान्**—भाग्यशाली।

अनुवाद

"कृष्ण द्वारा छोड़ा गया भोजन फेला कहलाता है। जो इसका अल्पांश भी प्राप्त कर लेता है, उसे अत्यन्त भाग्यशाली मानना चाहिए।

सामान्य भागय हैते तार प्राप्ति नाहि हय ।
कृष्णेर यँाते पूर्ण-कृपा, सेइ ताहा पाय ॥९९॥

सामान्य भाग्य हैते तार प्राप्ति नाहि हय ।
कृष्णेर ग्रँाते पूर्ण-कृपा, सेइ ताहा पाय ॥ ९९ ॥

सामान्य—सामान्य; **भाग्य**—भाग्य; **हैते**—से; **तार**—उसकी; **प्राप्ति**—प्राप्ति; **नाहि**—नहीं; **हय**—हो सकती; **कृष्णेर**—भगवान् कृष्ण की; **ग्रँाते**—जिन पर; **पूर्ण-कृपा**—पूर्ण कृपा; **सेइ**—वही; **ताहा**—वह; **पाय**—पाता है।

अनुवाद

"जो केवल सामान्य भाग्यवान् है, उसे ऐसी कृपा प्राप्त नहीं हो सकती। केवल वे ही ऐसा शेष प्रसाद पा सकते हैं, जिन पर कृष्ण की पूर्ण कृपा हो।

'सुकृति'-शब्दे कहे 'कृष्ण-कृपा-हेतु पुण्य' ।
सेइ यँार हय, 'फेला' पाय सेइ धन्य'' ॥१००॥

'सुकृति'-शब्दे कहे 'कृष्ण-कृपा-हेतु पुण्य' ।
सेइ ग्रँार हय, 'फेला' पाय सेइ धन्य" ॥ १०० ॥

सुकृति—सुकृति (पूण्य कर्म); **शब्दे**—शब्द; **कहे**—समझा जाना चाहिए; **कृष्ण-कृपा**—कृष्ण की कृपा; **हेतु**—के कारण; **पुण्य**—पूण्य कर्म; **सेइ**—वे; **ग्रँार**—जिनका; **हय**—है; **फेला**—बचा हुआ भोजन; **पाय**—पाता है; **सेइ**—वह; **धन्य**—धन्य है।

अनुवाद

"'सुकृति' शब्द कृष्ण कृपा से सम्पन्न होने वाले पुण्य कर्मों का द्योतक है। जो ऐसी कृपा प्राप्त करने के लिए भाग्यशाली होता है, वही भगवान् के भोजन का शेष पाता है और धन्य हो जाता है।"

এত বলি' প্রভু তা-সবারে বিদায় দিলা ।
উপল-ভোগ দেখিয়া প্রভু নিজ-বাসা আইলা ॥ ১০১ ॥

এত বলি' প্রভু তা-সবারে বিদায় দিলা ।
উপল-ভোগ দেখিয়া প্রভু নিজ-বাসা আইলা ॥ ১০১ ॥

এত বলি'—यह कहकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ता-सबारे**—उन सबको; **विदाय दिला**—विदा कर दिया; **उपल-भोग**—उपल भोग; **देखिया**—देखकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **निज-वासा**—अपने स्थान पर; **आइला**—लौट आये।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने सारे सेवकों को विदा कर दिया। फिर उपल भोग उत्सव के दर्शन करने के उपरान्त वे अपने स्थान पर लौट आये।

মধ্যাহ্ন করিয়া কৈলা ভিক্ষা নির্বাহণ ।
কৃষ্ণাধরামৃত সদা অন্তরে স্মরণ ॥ ১০২ ॥

মধ্যাহ্ন করিয়া কৈলা ভিক্ষা নির্বাহণ ।
কৃষ্ণাধরামৃত সদা অন্তরে স্মরণ ॥ ১০২ ॥

मध्याह्न करिया—दोपहर के कृत्य करने के बाद; **कैला भिक्षा निर्वाहण**—दोपहर का भोजन किया; **कृष्ण-अधर-अमृत**—कृष्ण के होठों का अमृत; **सदा**—सदा; **अन्तरे**—अपने अन्तर में; **स्मरण**—स्मरण करते हुए।

अनुवाद

दोपहर के कृत्य पूरे करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने दोपहर का भोजन किया, किन्तु वे लगातार कृष्ण के शेष प्रसाद का स्मरण करते रहे।

বাহ্য-কৃত্য করেন, প্রেমে গরগর মন ।
কষ্টে সম্বরণ করেন, আবেশ সঘন ॥ ১০৩ ॥

বাহ্য-কৃত্য করেন, প্রেমে গরগর মন ।
কষ্টে সম্বরণ করেন, আবেশ সঘন ॥ ১০৩ ॥

बाह्य-कृत्य—बाह्य कार्य; **करेन**—करते; **प्रेमे**—प्रेम से; **गरगर**—पूरित रहते; **मन**—मन; **कष्टे**—बड़ी कठिनाइ से; **सम्वरण करेन**—रोक पाना; **आवेश**—आवेश; **सघन**—अत्यन्त गहन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु अपने बाह्य कार्य तो सम्पन्न करते, किन्तु उनका मन प्रेम से पूरित रहता। वे बड़ी कठिनाई से अपने मन को रोक पाते, तो भी वह सदैव गहन भाव से अभिभूत हो उठता।

सन्ध्या-कृत्य करि' पुनः निज-गण-सङ्गे ।
निभृते वसिला नाना-कृष्ण-कथा-रङ्गे ॥ १०४॥

सन्ध्या-कृत्य करि' पुनः निज-गण-सङ्गे ।
निभृते वसिला नाना-कृष्ण-कथा-रङ्गे ॥ १०४॥

सन्ध्या-कृत्य—सन्ध्या कर्म; **करि'**—कर लेने के बाद; **पुनः**—पुनः; **निज-गण-सङ्गे**—अपने निजी संगियों के साथ; **निभृते**—एकान्त स्थान में; **वसिला**—बैठ गये; **नाना**—नाना; **कृष्ण-कथा**—कृष्ण की लीलाओं की; **रङ्गे**—हर्ष के साथ।

अनुवाद

अपने सन्ध्या कर्म समाप्त कर लेने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु एकान्त स्थान में अपने निजी संगियों के साथ बैठ गये और अत्यन्त हर्ष के साथ कृष्ण की लीलाओं की चर्चा की।

प्रभुर इङ्गिते गोविन्द प्रसाद आनिला ।
पुरी-भारतीरे प्रभु किछु पाठाइला ॥ १०५॥

प्रभुर इङ्गिते गोविन्द प्रसाद आनिला ।
पुरी-भारतीरे प्रभु किछु पाठाइला ॥ १०५॥

प्रभुर इङ्गिते—श्री चैतन्य महाप्रभु के संकेत से; **गोविन्द**—गोविन्द; **प्रसाद आनिला**—भगवान् जगन्नाथ जी का बचा हुआ भोजन ले आया; **पुरी**—परमानन्द पुरी को; **भारतीरे**—ब्रह्मानन्द भारती को; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **किछु**—कुछ; **पाठाइला**—भिजवाया।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के संकेत पर गोविन्द भगवान् जगन्नाथ जी का

प्रसाद ले आया। महाप्रभु ने कुछ प्रसाद परमानन्द पुरी तथा ब्रह्मानन्द भारती के लिए भिजवाया।

रामानन्द-सार्वभौम-स्वरूपादि-गणे ।
सबारे प्रसाद दिल करिया वण्टने ॥ १०६ ॥
रामानन्द-सार्वभौम-स्वरूपादि-गणे ।
सबारे प्रसाद दिल करिया वण्टने ॥ १०६ ॥

रामानन्द—रामानन्द राय; **सार्वभौम**—सार्वभौम भट्टाचार्य; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **आदि**—इत्यादि; **गणे**—उनको; **सबारे**—सबको; **प्रसाद**—भगवान् जगन्नाथ जी का बचा हुआ प्रसाद; **दिल**—दे दिया; **करिया वण्टने**—हिस्सा बनाकर।

अनुवाद

तब श्री चैतन्य महाप्रभु ने प्रसाद का कुछ अंश रामानन्द राय, सार्वभौम भट्टाचार्य, स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा अन्य सारे भक्तों को दिया।

प्रसादेर सौरभ्य-माधुर्य करि' आस्वादन ।
अलौकिक आस्वादे सबार विस्मित हैल मन ॥ १०७ ॥
प्रसादेर सौरभ्य-माधुर्य्य करि' आस्वादन ।
अलौकिक आस्वादे सबार विस्मित हैल मन ॥ १०७ ॥

प्रसादेर—प्रसाद की; **सौरभ्य-माधुर्य्य**—मधुरता और सुगन्ध; **करि' आस्वादन**—आस्वादन किया; **अलौकिक**—असाधारण; **आस्वादे**—स्वाद से; **सबार**—हर एक का; **विस्मित**—आश्चर्यचकित; **हैल**—हुआ; **मन**—मन।

अनुवाद

जब उन सबों ने प्रसाद की असाधारण मधुरता तथा सुगन्ध का आस्वादन किया, तो हर एक का मन आश्चर्यचकित हो गया।

प्रभु कहे,—"एई सब हय 'प्राकृत' द्रव्य ।
ऐक्षव, कर्पूर, मरिच, एलाइच, लवङ्ग, गव्य ॥ १०८ ॥

রসবাস, গুড়ত্বক-আদি যত সব ।
'প্রাকৃত' বস্তুর স্বাদ সবার অনুভব ॥ ১০৯॥

প্রভু কহে,—"এই সব হয় 'প্রাকৃত' দ্রব্য ।
ঐক্ষব, কর্পূর, মরিচ, এলাইচ, লবঙ্গ, গব্য ॥ ১০৮॥
রসবাস, গুড়ত্বক-আদি যত সব ।
'প্রাকৃত' বস্তুর স্বাদ সবার অনুভব ॥ ১০৯॥

প্রভু কহে—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **एइ**—ये; **सब**—सब; **हय**—हैं; **प्राकृत**—भौतिक; **द्रव्य**—वस्तुएँ; **ऐक्षव**—चीनी; **कर्पूर**—कपूर; **मरिच**—काली मिर्च; **एलाइच**—इलायची; **लवङ्ग**—लौंग; **गव्य**—मक्खन; **रसवास**—मसाले; **गुड़त्वक**—मुलेठी; **आदि**—आदि; **यत सब**—ये सभी; **प्राकृत**—भौतिक; **वस्तुर**—वस्तुएँ; **स्वाद**—स्वाद; **सबार**—हर एक का; **अनुभव**—अनुभव है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "चीनी, कपूर, काली मिर्च, इलायची, लौंग, मक्खन, मसाले तथा मुलेठी—ये सभी तो भौतिक वस्तुएँ हैं। इन सभी भौतिक वस्तुओं का स्वाद प्रत्येक ने पहले लिया है।

तात्पर्य

प्राकृत शब्द उन वस्तुओं का द्योतक है, जिनका आस्वादन बद्धजीव अपनी इन्द्रियतृप्ति के लिए करते हैं। ऐसे पदार्थ भौतिक नियमों से सीमित हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु यह बताना चाह रहे थे कि भौतिक वस्तुओं का स्वाद भौतिकता में लिप्त लोगों को पहले से ज्ञात होता है, जो मात्र इन्द्रियतृप्ति में रुचि रखते हैं।

সেই দ্রব্যে এত আস্বাদ, গন্ধ লোকাতীত ।
আস্বাদ করিয়া দেখ,—সবার প্রতীত ॥ ১১০॥

সেই দ্রব্যে এত আস্বাদ, গন্ধ লোকাতীত ।
আস্বাদ করিয়া দেখ,—সবার প্রতীত ॥ ১১০॥

सेइ द्रव्ये—ऐसी वस्तुओं में; **एत**—इतना; **आस्वाद**—आस्वाद; **गन्ध**—सुगन्ध; **लोक-अतीत**—किसी सामान्य व्यक्ति ने पहले कभी अनुभव नहीं किया; **आस्वाद करिया**—आस्वाद लिया; **देख**—देखो; **सबार**—सभी को; **प्रतीत**—अनुभव करके।

अनुवाद

महाप्रभु ने आगे कहा, "किन्तु इन वस्तुओं में असामान्य स्वाद तथा सुगन्ध है। जरा चखो तो और अन्तर का अनुभव करके देखो।

आस्वाद दूरे रहु, यार गन्धे माते मन ।
आपना विना अन्य माधुर्य कराय विस्मरण ॥ १११॥

आस्वाद दूरे रहु, यार गन्धे माते मन ।
आपना विना अन्य माधुर्य्य कराय विस्मरण ॥ १११॥

आस्वाद—आस्वाद; **दूरे रहु**—दूर रहने दो; **यार**—जिसकी; **गन्धे**—गन्ध तक; **माते**—भाती है; **मन**—मन को; **आपना विना**—किसी भी; **अन्य**—अन्य; **माधुर्य्य**—मधुरता को; **कराय विस्मरण**—भुला देती है।

अनुवाद

"स्वाद के अतिरिक्त सुगन्ध तक मन को भाती है और वह उसके आगे अन्य किसी भी मधुरता को भुला देती है।

তাতে এই দ্রব্যে কৃষ্ণাধর-স্পর্শ হৈল ।
অধরের গুণ সব ইহাতে সঞ্চারিল ॥ ১১২॥

তাতে এই দ্রব্যে কৃষ্ণাধর-স্পর্শ হৈল ।
অধরের গুণ সব ইহাতে সঞ্চারিল ॥ ১১২॥

তাতে—इसलिए; **এই দ্রব্যে**—इन द्रव्यों में; **কৃষ্ণ-অধর**—कृष्ण के होठों का; **স্পর্শ**—स्पर्श; **হৈল**—हुआ है; **অধরের**—होठों के; **গুণ**—गुण; **সব**—सब; **ইহাতে**—इन द्रव्यों में; **সঞ্চারিল**—आ गये हैं।

अनुवाद

"इसलिए इससे यह समझना चाहिए कि इन सामान्य वस्तुओं में कृष्ण के होठों के दिव्य अमृत का स्पर्श हुआ है, जिससे इनमें उन होठों के सारे आध्यात्मिक गुण आ गये हैं।

तात्पर्य

चूँकि सभी भक्त इन वस्तुओं का आस्वादन पहले से कर चुके थे, तो फिर ये वस्तुएँ क्यों असाधारण तथा आध्यात्मिक रूप से स्वादिष्ट बन गई थीं? यही

प्रमाण था कि कृष्ण के होठों का स्पर्श पाकर भोजन या प्रसाद असाधारण रूप से सुगन्ध युक्त तथा स्वादिष्ट बन जाता है।

অলৌকিক-গন্ধ-স্বাদ, অন্য-বিস্মারণ ।
মহা-মাদক হয় এই কৃষ্ণাধরের গুণ ॥ ১১৩॥

অলৌকিক-গন্ধ-স্বাদ, অন্য-বিস্মারণ ।
মহা-মাদক হয় এই কৃষ্ণাধরের গুণ ॥ ১১৩॥

অলৌকিক—असाधारण; **গন্ধ**—गन्ध; **স্বাদ**—स्वाद; **অন্য-বিস্মারণ**—अन्य सारों को विस्मृत करवाने वाला; **মহা-মাদক**—अत्यन्त मोहक; **হয়**—हुआ; **এই**—यह; **কৃষ্ণ-অধরের**—कृष्ण के होठों के; **গুণ**—गुण।

अनुवाद

कृष्ण के होठों के गुण हैं—"असाधारण अत्यन्त मोहक सुगन्ध तथा स्वाद, जो अन्य सारे अनुभवों को विस्मृत करा देते हैं।

অনেক 'সুকৃতে' ইহা হঞাছে সম্প্রাপ্তি ।
সবে এই আস্বাদ কর করি' মহা-ভক্তি'' ॥ ১১৪॥

অনেক 'সুকৃতে' ইহা হঞাছে সম্প্রাপ্তি ।
সবে এই আস্বাদ কর করি' মহা-ভক্তি" ॥ ১১৪॥

অনেক—अनेक; **সুকৃতে**—पुण्य कार्यों के; **ইহা**—यह; **হঞাছে সম্প্রাপ্তি**—प्राप्य हुआ है; **সবে**—तुम सब; **এই**—इसे; **আস্বাদ কর**—आस्वादन करो; **করি' মহা-ভক্তি**—महान् भक्ति के साथ।

अनुवाद

"यह प्रसाद अनेक पुण्य कार्यों के फलस्वरूप ही प्राप्त हुआ है। अब इसका अतीव श्रद्धा तथा भक्ति के साथ आस्वादन करो।"

হরি-ধ্বনি করি' সবে কৈলা আস্বাদন ।
আস্বাদিতে প্রেমে মত্ত হ-ইল সবার মন ॥ ১১৫॥

হরি-ধ্বনি করি' সবে কৈলা আস্বাদন ।
আস্বাদিতে প্রেমে মত্ত হ-ইল সবার মন ॥ ১১৫॥

हरि-ध्वनि करि'—हरि नाम का कीर्तन करते हुए; **सबे**—उन सब ने; **कैला आस्वादन**—आस्वादन किया; **आस्वादिते**—आस्वादन करते ही; **प्रेमे**—प्रेमावेश से; **मत्त**—उन्मत्त; **ह-इल**—हो उठे; **सबार मन**—सबके मन।

अनुवाद

सबों ने उच्च स्वर से हरि नाम का कीर्तन करते हुए प्रसाद का आस्वादन किया। उसका आस्वादन करते ही उनके मन प्रेमावेश से उन्मत्त हो उठे।

प्रेमावेशे महाप्रभु यबे आज्ञा दिला ।
रामानन्द-राय श्लोक पड़िते लागिला ॥११६॥

प्रेमावेशे महाप्रभु यबे आज्ञा दिला ।
रामानन्द-राय श्लोक पड़िते लागिला ॥११६॥

प्रेम-आवेशे—प्रेमावेश में; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **यबे**—जब; **आज्ञा दिला**—आदेश दिया; **रामानन्द-राय**—रामानन्द राय; **श्लोक**—श्लोक; **पड़िते लागिला**—पढ़ने लगे।

अनुवाद

प्रेमावेश में श्री चैतन्य महाप्रभु ने रामानन्द राय को कुछ श्लोक सुनाने का आदेश दिया। तब रामानन्द राय इस प्रकार बोले।

सुरत-वर्धनं शोक-नाशनं
स्वरित-वेणुना सुष्ठु-चुम्बितम् ।
इतर-राग-विस्मारणं नृणां
वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ॥११७॥

सुरत-वर्धनं शोक-नाशनं
स्वरित-वेणुना सुष्ठु-चुम्बितम् ।
इतर-राग-विस्मारणं नृणां
वितर वीर नस्तेऽधरामृतम् ॥११७॥

सुरत-वर्धनम्—भोग की कामेच्छाओं को बढ़ाता है; **शोक-नाशनम्**—सर्व शोक को कम करता है; **स्वरित-वेणुना**—वंशी की ध्वनि से; **सुष्ठु**—अच्छी तरह; **चुम्बितम्**—स्पर्श किया; **इतर-राग-विस्मारणम्**—अन्य सारी आसक्तियों को भुलाने वाली; **नृणाम्**—मनुष्यों

को; **वितर**—प्रदान करें; **वीर**—हे दानवीर; **नः**—हमें; **ते**—आपके; **अधर-अमृतम्**—होठों का अमृत।

अनुवाद

"'हे दानवीर, कृपया हमें अपने होठों का अमृत प्रदान करें। यह अमृत भोग की कामेच्छाओं को बढ़ाता है और भौतिक जगत् में शोक को कम करता है। कृपया हमें अपने उन होठों का अमृत दें, जिनका स्पर्श आपकी दिव्य ध्वनि करने वाली वंशी करती है, क्योंकि वह अमृत सारे मनुष्यों को उनकी अन्य सारी आसक्तियों को भूल जाने के लिए प्रेरित करता है।'"

तात्पर्य

यह उद्धरण *श्रीमद्भागवत* (१०.३१.१४) का है।

श्लोक शुनि' महाप्रभु महा-तुष्ट हैला ।
राधार उत्कण्ठा-श्लोक पड़िते लागिला ॥ ११८॥

श्लोक शुनि' महाप्रभु महा-तुष्ट हैला ।
राधार उत्कण्ठा-श्लोक पड़िते लागिला ॥ ११८॥

श्लोक शुनि'—श्लोक सुनकर; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **महा-तुष्ट**—अत्यधिक तुष्ट; **हैला**—हुए; **राधार**—श्रीमती राधारानी के; **उत्कण्ठा-श्लोक**—श्लोक अत्यन्त उत्कण्ठा में; **पड़िते लागिला**—पढ़ने लगे।

अनुवाद

रामानन्द राय द्वारा यह श्लोक सुनाने पर श्री चैतन्य महाप्रभु अत्यधिक तुष्ट हुए। तब उन्होंने स्वयं निम्नलिखित श्लोक सुनाया, जिसे श्रीमती राधारानी ने अत्यन्त उत्कण्ठा में कहा था।

व्रजातुल-कुलाङ्गनेतर-रसालि-तृष्ण-हर-
प्रदीव्यदधरामृतः सुकृति-लभ्य-फेला-लवः ।
सुधा-जिदहिवल्लिका-सुदल-वीटिका-चर्वितः
स मे मदन-मोहनः सखि तनोति जिह्वा-स्पृहाम् ॥ ११९॥

व्रजातुल-कुलाङ्गनेतर-रसालि-तृष्णा-हर-
प्रदीव्यदधरामृतः सुकृति-लभ्य-फेला-लवः ।

सुधा-जिदहिवल्लिका-सुदल-वीटिका-चर्वितः
स मे मदन-मोहनः सखि तनोति जिह्वा-स्पृहाम् ॥ ११९ ॥

व्रज—वृन्दावन का; **अतुल**—अतुलनीय; **कुल-अङ्गना**—गोपियों का; **इतर**—अन्य; **रस-आलि**—रस के लिए; **तृष्णा**—इच्छा; **हर**—हरते हुए; **प्रदीव्यत्**—सबका अतिक्रमण करनेवाला; **अधर-अमृतः**—जिनके होठों का अमृत; **सुकृति**—अनेक पुण्य कर्मों के बाद; **लभ्य**—प्राप्त होने वाला; **फेला**—जिनके होठों का अमृत; **लवः**—एक अंश; **सुधा-जित्**—अमृत को परारत करने वाला; **अहि-वल्लिका**—पान की लता; **सु-दल**—चुने गये पत्तों से बना; **वीटिका**—पान; **चर्वितः**—चबाकर; **सः**—वे; **मे**—मेरा; **मदन-मोहनः**—मदनमोहन; **सखि**—हे प्रिय सखी; **तनोति**—बढ़ाता है; **जिह्वा**—जिह्वा की; **स्पृहाम्**—इच्छा।

अनुवाद

"'हे सखी, पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् कृष्ण के होठों का अद्वितीय अमृत अनेकानेक पुण्य कर्मों के बाद ही प्राप्त किया जा सकता है। वृन्दावन की सुन्दर गोपियों के लिए वह अमृत अन्य सारे स्वादों की इच्छा को दूर करता है। मदनमोहन सदैव पान खाते हैं, जो स्वर्ग के अमृत को भी मात करता है। वे निश्चित रूप से हमारी जीभ की इच्छाओं को वर्धित कर रहे हैं।'"

तात्पर्य

यह श्लोक गोविन्द लीलामृत (८.८) से लिया गया है।

এত কহি' গৌর-প্রভু ভাবাবিষ্ট হঞা ।
দুই শ্লোকের অর্থ করে প্রলাপ করিয়া ॥ ১২০ ॥

এত কহি' গৌর-প্রভু ভাবাবিষ্ট হঞা ।
দুই শ্লোকের অর্থ করে প্রলাপ করিয়া ॥ ১২০ ॥

এত কহি'—यह कहकर; **গৌর-প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ভাব-আবিষ্ট**—प्रेमावेश से विह्वल; **হঞা**—होकर; **দুই শ্লোকের**—दो श्लोकों का; **অর্থ**—अर्थ; **করে**—करते; **প্রলাপ করিয়া**—उन्मत्त की तरह।

अनुवाद

यह कहकर श्री चैतन्य महाप्रभु प्रेमावेश से विह्वल हो गये। उन्मत्त की तरह बातें करते हुए वे इन दोनों श्लोकों का अर्थ बतलाने लगे।

तनु-मन कराय क्षोभ, बाड़ाय सुरत-लोभ,
हर्ष-शोकादि-भार विनाशय
पासराय अन्य रस, जगत्करे आत्म-वश,
लज्जा, धर्म, धैर्य करे क्षय
नागर, शुन तोमार अधर-चरित
माताय नारीर मन, जिह्वा करे आकर्षण,
विचारिते सब विपरीत

तनु-मन कराय क्षोभ, बाड़ाय सुरत-लोभ,
हर्ष-शोकादि-भार विनाशय
पासराय अन्य रस, जगत्करे आत्म-वश,
लज्जा, धर्म, धैर्य्य करे क्षय
नागर, शुन तोमार अधर-चरित
माताय नारीर मन, जिह्वा करे आकर्षण,
विचारिते सब विपरीत

तनु—तन; **मन**—मन; **कराय**—को करके; **क्षोभ**—चंचल; **बाड़ाय**—बढ़ाना; **सुरत-लोभ**—कामेच्छा का उपभोग; **हर्ष**—हर्ष; **शोक**—शोक; **आदि**—आदि; **भार**—भार; **विनाशय**—नष्ट करता है; **पासराय**—भुलवा देता है; **अन्य रस**—अन्य स्वाद; **जगत्**—सारा जगत्; **करे**—किया; **आत्म-वश**—उनके नियन्त्रण में; **लज्जा**—लज्जा; **धर्म**—धर्म; **धैर्य्य**—धैर्य; **करे क्षय**—नष्ट किया; **नागर**—हे प्रेमी; **शुन**—सुनो; **तोमार**—आपके; **अधर**—होठों के; **चरित**—गुणों (चरित्र) का; **माताय**—उन्मत्त बनाते हैं; **नारीर**—स्त्री का; **मन**—मन; **जिह्वा**—जिह्वा; **करे आकर्षण**—आकृष्ट करता है; **विचारिते**—विचार करते; **सब**—सब; **विपरीत**—विपरीत।

अनुवाद

भगवान् चैतन्य ने श्रीमती राधारानी के भाव में कहा, "हे प्रेमी, आपके दिव्य होठों के कुछ गुणों का मुझे वर्णन करने दो। वे हर एक के मन तथा तन को चंचल बनाते हैं, वे भोग की कामेच्छा को बढ़ाते हैं, वे भौतिक सुख और शोक के भार को नष्ट कर देते हैं और सारे भौतिक स्वादों को भुलवा देते हैं। सारा संसार उनके वशीभूत हो जाता है। वे विशेषतया स्त्रियों की लज्जा, धर्म तथा धैर्य को विनष्ट कर देते हैं। निस्सन्देह, वे समस्त स्त्रियों के मन में उन्मत्तता को बढ़ावा देते हैं। आपके

होठ जीभ के लोभ को बढ़ाकर उसे अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। इन सब बातों पर विचार करते हुए हम देखती हैं कि आपके दिव्य होठ हमें सदैव व्याकुल बनाते हैं।

আছুক নারীর কায়, কহিতে বাসিয়ে লাজ,
তোমার অধর বড় ধৃষ্ট-রায় ।
পুরুষে করে আকর্ষণ, আপনা পিয়াইতে মন,
অন্য-রস সব পাসরায় ॥ ১২৩॥

আছুক নারীর কায়, কহিতে বাসিয়ে লাজ,
তোমার অধর বড় ধৃষ্ট-রায় ।
পুরুষে করে আকর্ষণ, আপনা পিয়াইতে মন,
অন্য-রস সব পাসরায় ॥ ১২৩॥

आछुक—होने दो; **नारीर**—स्त्रियों के; **काय**—शरीर का; **कहिते**—कहना; **वासिये**—मैं अनुभव करती हूँ; **लाज**—लाज; **तोमार**—तुम्हारा; **अधर**—होठ; **बड़**—बहुत; **धृष्ट-राय**—निर्लज्ज; **पुरुषे**—पुरुष; **करे आकर्षण**—आकृष्ट करते हैं; **आपना**—उनको; **पियाइते**—पिलाते हैं; **मन**—मन; **अन्य-रस**—अन्य स्वाद; **सब**—सब; **पासराय**—भूला देते हैं।

अनुवाद

"हे कृष्ण, चूँकि आप पुरुष हो, इसलिए यह कोई असाधारण बात नहीं है कि आपके होठों का आकर्षण स्त्रियों के मन को क्षुब्ध करता है। किन्तु मुझे यह कहते लज्जा आती है कि आपके होठ कभी-कभी आपकी वंशी तक को आकृष्ट करते हैं, जो एक पुरुष माना जाता है। वह तुम्हारे होठों के अमृत का पान करना पसन्द करता है, इसीलिए उसे भी अन्य सारे स्वादों की विस्मृति हो जाती है।

সচেতন রহু দূরে, অচেতন সচেতন করে,
তোমার অধর—বড় বাজিকর ।
তোমার বেণু শুষ্কেন্ধন, তার জন্মায় ইন্দ্রিয়-মন,
তারে আপনা পিয়ায় নিরন্তর ॥ ১২৪॥

सचेतन रहु दूरे, अचेतन सचेतन करे,
तोमार अधर—बड़ वाजिकर ।
तोमार वेणु शुष्केन्धन, तार जन्माय इन्द्रिय-मन,
तारे आपना पियाय निरन्तर ॥ १२४॥

स-चेतन—चेतन जीवों के; **रहु दूरे**—की बात छोड़ो; **अचेतन**—अचेतन; **स-चेतन**—चेतन; **करे**—करते हैं; **तोमार**—आपके; **अधर**—होठ; **बड़**—बहुत बड़े; **वाजिकर**—जादूगर; **तोमार**—आपकी; **वेणु**—वंशी; **शुष्क-इन्-धन**—सूखा काष्ठ; **तार**—उसीके; **जन्माय**—बनाते हैं; **इन्द्रिय-मन**—इन्द्रिय और मन; **तारे**—वंशी; **आपना**—अपना; **पियाय**—पीने का कारण; **निरन्तर**—निरन्तर।

अनुवाद

"आपके होठों द्वारा चेतन जीवों के अतिरिक्त कभी-कभी अचेतन पदार्थ भी चेतन बना दिये जाते हैं। इसलिए आपके होठ बहुत बड़े जादूगर हैं। विडम्बना तो यह है कि यद्यपि आपकी वंशी मात्र सूखा काष्ठ है, किन्तु आपके होठ उसे अपना अमृत पिलवाते हैं। वे शुष्क काष्ठ की बनी वंशी में मन तथा इन्द्रियाँ उत्पन्न करते हैं और उसे दिव्य आनन्द प्रदान करते हैं।

বেণু ধৃষ্ট-পুরুষ হঞা, পুরুষাধর পিয়া পিয়া,
গোপী-গণে জানায় নিজ-পান ।
অহো শুন, গোপী-গণ, বলে পিঙো তোমার ধন,
তোমার যদি থাকে অভিমান ॥ ১২৫॥

वेणु धृष्ट-पुरुष हञा, पुरुषाधर पिया पिया,
गोपी-गणे जानाय निज-पान ।
अहो शुन, गोपी-गण, बले पिङो तोमार धन,
तोमार यदि थाके अभिमान ॥ १२५॥

वेणु—वंशी; **धृष्ट-पुरुष**—धृष्ट पुरुष; **हञा**—होकर; **पुरुष-अधर**—पुरुष के होठों के; **पिया पिया**—पिते रहे; **गोपी-गणे**—गोपियों तक; **जानाय**—जाने; **निज-पान**—निज पान; **अहो**—अहो; **शुन**—सुनो; **गोपी-गण**—गोपियाँ; **बले**—कहती हैं; **पिङो**—पीना; **तोमार**—तुम्हारी; **धन**—सम्पत्ति; **तोमार**—तुम्हारा; **यदि**—अगर; **थाके**—है; **अभिमान**—गर्व।

अनुवाद

"वह वंशी (वेणु) अत्यन्त धृष्ट पुरुष है, जो अन्य पुरुष के होठों के स्वाद का बारम्बार पान करता है। यह वंशी रूपी पुरुष अपने गुणों का विज्ञापन करते हुए गोपियों से कहता है, 'हे गोपियों, यदि तुम्हें स्त्रियाँ होने का गर्व है, तो आगे आओ और अपनी सम्पत्ति का—भगवान् के होठों के अमृत का—भोग करो।'

তবে মোরে ক্রোধ করি', লজ্জা ভয়, ধর্ম, ছাড়ি',
ছাড়ি' দিমু, কর আসি' পান ।
নহে পিমু নিরন্তর, তোমায় মোর নাহিক ডর,
অন্যে দেখোঁ তৃণের সমান ॥ ১২৬॥

तबे मोरे क्रोध करि', लज्जा भय, धर्म, छाड़ि',
छाड़ि' दिमु, कर आसि' पान ।
नहे पिमु निरन्तर, तोमाय मोर नाहिक डर,
अन्ये देखों तृणेर समान ॥ १२६॥

तबे—इस पर; **मोरे**—मुझ से; **क्रोध करि'**—क्रोधित होकर; **लज्जा**—लाज; **भय**—भय; **धर्म**—धर्म; **छाड़ि'**—छोड़कर; **छाड़ि'**—छोड़कर; **दिमु**—मैं देता हूँ; **कर आसि' पान**—पीने आओ; **नहे**—नहीं; **पिमु**—मैं पिऊँगा; **निरन्तर**—नित्य; **तोमाय**—तुम्हें; **मोर**—मेरा; **नाहिक**—नहीं है; **डर**—डर; **अन्ये**—अन्यों को; **देखों**—देखो; **तृणेर समान**—तिनके के समान।

अनुवाद

"इस पर वंशी ने क्रुद्ध होकर मुझसे कहा, 'तुम अपनी लाज, भय तथा धर्म छोड़ दो और आकर कृष्ण के होठों का पान करो। इस शर्त पर मैं उनके प्रति अपनी अनुरक्ति छोड़ूँगी, किन्तु यदि तुम अपनी लाज तथा भय नहीं छोड़ सकती, तो मैं निरन्तर कृष्ण के होठों का अमृत पान करती रहूँगी। मैं कुछ कुछ भयभीत हूँ, क्योंकि तुम्हें भी उस अमृत को पीने का अधिकार है, लेकिन अन्यों को मैं तिनके के बराबर मानती हूँ।'

অধরামৃত নিজ-স্বরে, সঞ্চারিয়া সেই বলে,
আকর্ষয় ত্রিজগজ্জন ।

আমরা ধর্ম-ভয় করি', রহি' যদি ধৈর্য ধরি',
তবে আমায় করে বিড়ম্বন ॥ ১২৭॥

অধরামৃত নিজ-স্বরে, সঞ্চারিয়া সেই বলে,
আকর্ষয় ত্রিজগত্‌জন ।
আমরা ধর্ম-ভয় করি', রহি' যদি ধৈর্য ধরি',
তবে আমায় করে বিড়ম্বন ॥ ১২৭॥

অধর-অমৃত—होठों का अमृत; **নিজ-স্বরে**—वंशी ध्वनि के साथ; **সঞ্চারিয়া**—मिलकर; **সেই**—वह; **বলে**—बल से; **আকর্ষয়**—आकृष्ट करता है; **ত্রি-জগত্-জন**—तीनों लोकों के सारे लोगों को; **আমরা**—हम; **ধর্ম**—धर्म; **ভয়**—भय; **করি'**—के कारण; **রহি'**—रहती; **যদি**—अगर; **ধৈর্য ধরি'**—धैर्य धारण किये; **তবে**—तब; **আমায়**—हमारी; **করে বিড়ম্বন**—आलोचना करते।

অনুবাদ

"कृष्ण के होठों का अमृत उनकी वंशी ध्वनि के साथ मिलकर तीनों लोकों के सारे लोगों को आकृष्ट करता है। किन्तु यदि हम गोपियाँ धर्म का आदर करने के कारण धैर्य धारण किये रहती हैं, तो यह वंशी हमारी आलोचना करती है।

নীবি খসায় গুরু-আগে, লজ্জা-ধর্ম করায় ত্যাগে,
কেশে ধরি' যেন লঞা যায় ।
আনি' করায় তোমার দাসী, শুনি' লোক করে হাসি',
এই-মত নারীরে নাচায় ॥ ১২৮॥

নীবি খসায় গুরু-আগে, লজ্জা-ধর্ম করায় ত্যাগে,
কেশে ধরি' যেন লঞা যায় ।
আনি' করায় তোমার দাসী, শুনি' লোক করে হাসি',
এই-মত নারীরে নাচায় ॥ ১২৮॥

নীবি—कमरपट्टा; **খসায়**—ढीला होने से; **গুরু-আগে**—गुरुजनों के पहले; **লজ্জা-ধর্ম**—लज्जा तथा धर्म; **করায়**—करके; **ত্যাগে**—त्याग; **কেশে ধরি'**—केश पकड़कर; **যেন**—जैसे; **লঞা যায়**—हमें ले जाते; **আনি'**—लाकर; **করায়**—होने के लिए प्रेरित करते हैं; **তোমার**—तुम्हारी; **দাসী**—दासी; **শুনি'**—सुनकर; **লোক**—लोग; **করে হাসি'**—हँसते हैं; **এই-মত**—इस तरह; **নারীরে**—स्त्री; **নাচায়**—नचाते हैं।

अनुवाद

"आपके होठों का अमृत तथा आपकी वंशी की ध्वनि दोनों मिलकर हमारे कमरपट्टे को ढीला कर देते हैं और हमें अपने गुरुजनों के समक्ष भी अपनी लज्जा तथा धर्म को छोड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। मानो वे हमारे केश पकड़कर बलपूर्वक हमें ले जाते हैं और आपकी दासी बनने के लिए हमसे आत्म समर्पण कराते हैं। ये घटनाएँ सुनकर लोग हम पर हँसते हैं। इस तरह हम पूरी तरह वंशी के अधीन हो गई हैं।

শুষ্ক বাঁশের লাঠিখান, এত করে অপমান,
এই দশা করিল, গোসাঞি ।
না সহি' কি করিতে পারি, তাহে রহি মৌন ধরি',
চোরার মাকে ডাকি' কান্দিতে নাই ॥১২৯॥

शुष्क बाँशेर लाठिखान, एत करे अपमान,
एइ दशा करिल, गोसाञि ।
ना सहि' कि करिते पारि, ताहे रहि मौन धरि',
चोरार माके डाकि' कान्दिते नाइ ॥ १२९ ॥

शुष्क—सूखा; **बाँशेर**—बाँस; **लाठि-खान**—लाठी; **एत**—यह; **करे अपमान**—अपमान; **एइ**—यह; **दशा**—अवस्था; **करिल**—किया; **गोसाञि**—स्वामिनी; **ना सहि'**—सहन न करते हुए; **कि**—क्या; **करिते पारि**—हम कर सकते; **ताहे**—उस समय; **रहि**—रहते हैं; **मौन धरि'**—मौन रखकर; **चोरार**—चोर की; **माके**—माता ने; **डाकि'**—उच्च स्वर में; **कान्दिते**—रोना; **नाइ**—सम्भव नहीं।

अनुवाद

"यह वंशी मात्र बांस की सूखी लाठी है, किन्तु यह हमारी स्वामिनी बनकर इतने प्रकार से हमारा अपमान करती है कि हम दुःखद स्थिति के लिए बाध्य हो जाती हैं। भला इसको सहन करने के अतिरिक्त हम कर भी क्या सकती हैं? जब चोर दण्डित हो रहा हो, तब चोर की माता न्याय के लिए उच्च स्वर से रो नहीं सकती। इसलिए हम मात्र मौन रह जाती हैं।

অধরের এই রীতি, আর শুন কুনীতি,
সে অধর-সনে যার মেলা ।
সেই ভক্ষ্য-ভোজ্য-পান, হয় অমৃত-সমান,
নাম তার হয় 'কৃষ্ণ-ফেলা' ॥ ১৩০ ॥

अधरेर एइ रीति, आर शुन कुनीति,
से अधर-सने यार मेला ।
सेइ भक्ष्य-भोज्य-पान, हय अमृत-समान,
नाम तार हय 'कृष्ण-फेला' ॥ १३० ॥

अधरेर—होठों की; **एइ**—यह; **रीति**—नीति; **आर**—अन्य; **शुन**—सुनो; **कुनीति**—अन्यायों का; **से**—वे; **अधर**—होठ; **सने**—के साथ; **यार**—जिसके; **मेला**—मिलकर; **सेइ**—वे; **भक्ष्य**—खाने की वस्तु; **भोज्य**—भोजन; **पान**—पिना अथवा पान; **हय**—होता है; **अमृत-समान**—अमृत के समान; **नाम**—नाम; **तार**—उनका; **हय**—है; **कृष्ण-फेला**—कृष्ण का बचा हुआ भोजन।

अनुवाद

"इन होठों का यही रीति है। जरा अन्य अन्यायों का तो विचार करो। इन होठों को जो भी वस्तु छू जाती है—चाहे भोजन, पेय या पान ही क्यों न हो—अमृत के समान बन जाती है। तब वह वस्तु कृष्ण-फेला अर्थात् कृष्ण का शेष प्रसाद कहलाती है।

সে ফেলার এক লব, না পায় দেবতা সব,
এ দম্ভে কেবা পাতিয়ায়? ।
বহু-জন্ম পুণ্য করে, তবে 'সুকৃতি' নাম ধরে,
সে 'সুকৃতে' তার লব পায় ॥ ১৩১ ॥

से फेलार एक लव, ना पाय देवता सब,
ए दम्भे केबा पातियाय? ।
बहु-जन्म पुण्य करे, तबे 'सुकृति' नाम धरे,
से 'सुकृते' तार लव पाय ॥ १३१ ॥

से फेलार—वह बचा हुआ शेष; **एक**—एक; **लव**—छोटा अंश; **ना पाय**—नहीं पाते; **देवता**—देवता; **सब**—सब; **ए दम्भे**—यह गर्व; **केबा**—जो; **पातियाय**—मान सकते हैं; **बहु-जन्म**—अनेक जन्मों के लिए; **पुण्य करे**—पुण्य करने पर; **तबे**—तब; **सुकृति**—पुण्य

कर्म करने वाला; **नाम**—नाम; **धरे**—धारण करता है; **से**—वे; **सुकृते**—पुण्य कर्मों से; **तार**—उसका; **लव**—अंश; **पाय**—पा सकती है।

अनुवाद

"अनेक प्रार्थनाओं के बाद भी देवता ऐसे भोजन के शेष का एक छोटा-सा अंश तक नहीं पा सकते। जरा उस शेष प्रसाद के गर्व की कल्पना तो करो! जिस व्यक्ति ने अनेकानेक जन्मों तक पुण्य किये हैं और इस तरह से भक्त बन गया है, वही ऐसे भोजन का शेष प्राप्त कर सकता है।

कृष्ण ये खाय ताम्बूल, कहे तार नाहि मूल,
ताहे आर दम्भ-परिपाटी ।
तार येबा उदगार, तारे कय 'अमृत-सार',
गोपीर मुख करे 'आलबाटी' ॥ १३२॥

कृष्ण ग्रे खाय ताम्बूल, कहे तार नाहि मूल,
ताहे आर दम्भ-परिपाटी ।
तार ग्रेबा उद्‌गार, तारे कय 'अमृत-सार',
गोपीर मुख करे 'आलबाटी' ॥ १३२॥

कृष्ण—भगवान् कृष्ण; **ग्रे**—क्या; **खाय**—चबाते हैं; **ताम्बूल**—पान; **कहे**—कहा जाता है; **तार**—उसका; **नाहि**—नहीं होता; **मूल**—मूल्य; **ताहे**—उसके ऊपर; **आर**—भी; **दम्भ-परिपाटी**—पूरा गर्व; **तार**—उसका; **ग्रेबा**—जो भी; **उद्‌गार**—उद्‌गार; **तारे**—वह; **कय**—कहलाता है; **अमृत-सार**—अमृत का सार; **गोपीर**—गोपियों के; **मुख**—मुख; **करे**—बनाता है; **आलबाटी**—पीकदान।

अनुवाद

"कृष्ण द्वारा चबाया गया पान अमूल्य है और उनके मुख से ऐसे चबाये हुए पान का शेष अमृत का सार कहलाता है। जब गोपियाँ इस उच्छिष्ट को ग्रहण करती हैं, तब उनके मुख कृष्ण के पीकदान बन जाते हैं।

এ-সব——তোমার কুটিনাটি, ছাড় এই পরিপাটী,
বেণু-দ্বারে কাঁহে হর' প্রাণ ।

আপনার হাসি লাগি', নহ নারীর বধ-ভাগী,
দেহ' নিজাধরামৃত-দান'' ॥১৩৩॥

এ-সব—তোমার কুটিনাটি, ছাড় এই পরিপাটী,
বেণু-দ্বারে কাঁহে হর' প্রাণ ।
আপনার হাসি লাগি', নহ নারীর বধ-ভাগী,
দেহ' নিজাধরামৃত-দান" ॥১৩৩॥

এ-সব—ये सब; **তোমার**—आपकी; **কুটিনাটি**—चालें; **ছাড়**—त्याग दो; **এই**—थे; **পরিপাটী**—आपके दक्षतापूर्ण कार्य; **বেণু-দ্বারে**—वंशी से; **কাঁহে**—क्यों; **হর**—तुम ले लेते हो; **প্রাণ**—प्राण; **আপনার**—अपनी; **হাসি**—हँसी; **লাগি'**—के लिए; **নহ**—मत करो; **নারীর**—स्त्रियों का; **বধ-ভাগী**—वध करने के उत्तरदायी; **দেহ'**—कृपया दो; **নিজ-অধর-অমৃত**—अपने होठों के अमृत का; **দান**—दान।

अनुवाद

"इसलिए हे कृष्ण, आपने जितनी चालें इतनी दक्षता से चला रखी हैं, उन सबों को त्याग दो। अपनी वंशी की ध्वनि से गोपियों के प्राण लेने का प्रयास मत करो। अपनी हँसी तथा उपहास से आप स्त्रियों का वध करने के उत्तरदायी बन रहे हो। आपके लिए अच्छा होगा कि हमें अपने होठों के अमृत का दान देकर हमें तुष्ट करो।"

কহিতে কহিতে প্রভুর মন ফিরি' গেল ।
ক্রোধ-অংশ শান্ত হৈল, উৎকণ্ঠা বাড়িল ॥১৩৪॥

কহিতে কহিতে প্রভুর মন ফিরি' গেল ।
ক্রোধ-অংশ শান্ত হৈল, উৎকণ্ঠা বাড়িল ॥১৩৪॥

কহিতে কহিতে—कहते कहते; **প্রভুর**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **মন**—मन; **ফিরি' গেল**—बदल गया; **ক্রোধ-অংশ**—क्रोध का अंश; **শান্ত হৈল**—शान्त हुआ; **উৎকণ্ঠা**—मानसिक क्षोभ; **বাড়িল**—बढ़ गया।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु इस तरह बातें कर रहे थे, तब उनका मन बदल गया। उनका क्रोध शान्त हो गया, किन्तु उनका मानसिक क्षोभ बढ़ गया।

परम दुर्लभ एई कृष्णाधरामृत ।
ताहा येई पाय, तार सफल जीवित ॥१३५॥

परम दुर्लभ एइ कृष्णाधरामृत ।
ताहा ग्रेइ पाय, तार सफल जीवित ॥ १३५ ॥

परम—सर्वोपरि; **दुर्लभ**—पाने के लिए कठिन; **एइ**—यह; **कृष्ण**—कृष्ण के; **अधर-अमृत**—होठों का अमृत; **ताहा**—वह; **ग्रेइ**—किसी एक को; **पाय**—मिल जाता है; **तार**—उसका; **स-फल**—सफल; **जीवित**—जीवन।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने आगे कहा, "कृष्ण के होठों का यह अमृत प्राप्त करना अत्यन्त दुर्लभ है, किन्तु यदि किसी को यह थोड़ा-सा भी मिल जाता है, तो उसका जीवन सफल हो जाता है।

योग्य हञा केह करिते ना पाय पान ।
तथापि से निर्लज्ज, वृथा धरे प्राण ॥१३६॥

ग्रोग्य हञा केह करिते ना पाय पान ।
तथापि से निर्लज्ज, वृथा धरे प्राण ॥ १३६ ॥

ग्रोग्य—योग्य; **हञा**—होकर; **केह**—कोई भी; **करिते**—करना; **ना पाय**—प्राप्त नहीं करता; **पान**—पीकर; **तथापि**—फिर भी; **से**—वह व्यक्ति; **निर्लज्ज**—निर्लज्ज; **वृथा**—व्यर्थ ही; **धरे प्राण**—जीवन धारण करता है।

अनुवाद

जब इस अमृत को पीने के लिए समर्थ व्यक्ति इसका पान नहीं करता, तो वह निर्लज्ज व्यक्ति व्यर्थ ही जीवन धारण करता है।

अयोग्य हञा ताहा केह सदा पान करे ।
योग्य जन नाहि पाय, लोभे मात्र मरे ॥१३७॥

अयोग्य हञा ताहा केह सदा पान करे ।
ग्रोग्य जन नाहि पाय, लोभे मात्र मरे ॥ १३७ ॥

अयोग्य—अयोग्य; **हञा**—होकर; **ताहा**—वह; **केह**—कोई एक; **सदा**—सदा; **पान**

करे—पीते हैं; **अयोग्य जन**—योग्य व्यक्ति; **नाहि पाय**—प्राप्त नहीं करता; **लोभे**—लाभवश; **मात्र**—सीधे; **मरे**—मर जाते हैं।

अनुवाद

"ऐसे लोग भी हैं, जो उस अमृत को पीने के योग्य नहीं हैं, फिर भी वे उसे लगातार पीते हैं, जबकि कुछ ऐसे योग्य व्यक्ति हैं, जो उसे कभी नहीं पाते और ललचाते हुए मर जाते हैं।

তাতে জানি,——কোন তপস্যার আছে বল ।
অয়োগ্যেরে দেওয়ায় কৃষ্ণাধরামৃত-ফল ॥১৩৮॥

তাতে জানি,——কোন তপস্যার আছে বল ।
অযোগ্যেরে দেওয়ায় কৃষ্ণাধরামৃত-ফল ॥ ১৩৮ ॥

তাতে—इसलिए; **জানি**—मैं समझ सकता हूँ; **কোন**—किसी ने; **তপস্যার**—तपस्या के; **আছে**—है; **বল**—बल पर; **অযোগ্যেরে**—अयोग्य को; **দেওয়ায়**—दे दिया; **কৃষ্ণ-অধর-অমৃত**—कृष्ण के होठों का अमृत; **ফল**—फल।

अनुवाद

"इससे यह समझ लेना होगा कि ऐसे अयोग्य व्यक्ति ने किसी तपस्या के बल पर कृष्ण के होठों का अमृत प्राप्त किया होगा।"

'কহ রাম-রায়, কিছু শুনিতে হয় মন' ।
ভাব জানি' পড়ে রায় গোপীর বচন ॥১৩৯॥

'কহ রাম-রায়, কিছু শুনিতে হয় মন' ।
ভাব জানি' পড়ে রায় গোপীর বচন ॥ ১৩৯ ॥

কহ—कहो; **রাম-রায়**—रामानन्द राय; **কিছু**—कुछ; **শুনিতে**—सुनने; **হয় মন**—की इच्छा; **ভাব**—स्थिति; **জানি'**—समझने; **পড়ে রায়**—रामानन्द राय पढ़ने लगे; **গোপীর বচন**—गोपियों के वचन (शब्द)।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने पुनः रामानन्द राय से कहा, "कृपया कुछ कहो। मैं सुनना चाहता हूँ।" स्थिति समझते हुए रामानन्द राय ने गोपियों के निम्नलिखित वचन सुनाये।

गोप्यः किमाचरदयं कुशलं स्म वेणुर्
दामोदराधर-सुधामपि गोपिकानाम् ।
भुङ्क्ते स्वयं यदवशिष्ट-रसं ह्रदिन्यो
हृष्यत्त्वचोऽश्रु मुमुचुस्तरवो यथार्याः ॥ १४० ॥

गोप्यः किमाचरदयं कुशलं स्म वेणुर्
दामोदराधर-सुधामपि गोपिकानाम् ।
भुङ्क्ते स्वयं यदवशिष्ट-रसं ह्रदिन्यो
हृष्यत्त्वचोऽश्रु मुमुचुस्तरवो यथार्याः ॥ १४० ॥

गोप्यः—हे गोपियों; **किम्**—क्या; **आचरत्**—किया; **अयम्**—यह; **कुशलम्**—शुभ कर्म; **स्म**—निश्चय ही; **वेणुः**—वंशी; **दामोदर**—कृष्ण के; **अधर-सुधाम्**—होठों का अमृत; **अपि**—भी; **गोपिकानाम्**—गोपियों का; **भुङ्क्ते**—भोग करती है; **स्वयम्**—स्वतन्त्र रूप से; **यत्**—जिससे; **अवशिष्ट**—बचा हुआ; **रसम्**—रस; **ह्रदिन्यः**—नदियाँ; **हृष्यत्**—हर्षित होकर; **त्वचः**—जिनके शरीर; **अश्रु**—अश्रु; **मुमुचुः**—बहाये; **तरवः**—वृक्ष; **यथा**—जिस तरह; **आर्याः**—पूर्वज।

अनुवाद

"'हे गोपियों, इस वंशी ने स्वतन्त्र रूप से कृष्ण के होठों का अमृत पान करने के लिए तथा वास्तव में जिन गोपियों के निमित्त यह अमृत है, उन्हें केवल थोड़ा-सा अवशिष्ट दिलाने के लिए कौन से पुण्य कर्म किये होंगे? वंशी के पूर्वज बांस के वृक्षों ने प्रसन्नता के आँसू बहाये। उसकी माता, नदी, जिसके किनारे बाँस उगे थे, हर्ष का अनुभव करती है, इसीलिए उसके शरीर में खिले हुए कमलपुष्प रोमांच (खडे हुए रोम) की तरह लग रहे हैं।'"

तात्पर्य

यह श्लोक *श्रीमद्भागवत* (१०.२१.९) का है, जो गोपियों में परस्पर हुई चर्चा का भाग है। वृन्दावन में शरद ऋतु के आते ही भगवान् कृष्ण गाएँ चराते थे और अपनी वंशी बजाते थे। तब गोपियाँ कृष्ण की प्रशंसा और उनकी वंशी के भाग्य की चर्चा करने लगीं।

এই শ্লোক শুনি' প্রভু ভাবাবিষ্ট হঞা ।
উৎকণ্ঠাতে অর্থ করে প্রলাপ করিয়া ॥ ১৪১ ॥

एइ श्लोक शुनि' प्रभु भावाविष्ट हञा ।
उत्कण्ठाते अर्थ करे प्रलाप करिया ॥ १४१ ॥

एइ श्लोक—इस श्लोक; **शुनि'**—सुनकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भाव-आविष्ट**—प्रेमाविष्ट; **हञा**—हो गये; **उत्कण्ठाते**—चंचल मन से; **अर्थ करे**—अर्थ करने लगे; **प्रलाप करिया**—उन्मत्त होकर बोलने लगे।

अनुवाद

इस श्लोक का पाठ सुनकर श्री चैतन्य महाप्रभु प्रेमाविष्ट हो गये और अत्यन्त चंचल मन से उन्मत्त व्यक्ति की तरह इसका अर्थ ऐसे करने लगे।

एहो ब्रजेन्द्र-नन्दन, ब्रजेर कोन कन्या-गण,
अवश्य करिब परिणय ।
से-सम्बन्धे गोपी-गण, यारे माने निज-धन,
से सुधा अन्येर लभ्य नय ॥ १४२ ॥

एहो ब्रजेन्द्र-नन्दन, ब्रजेर कोन कन्या-गण,
अवश्य करिब परिणय ।
से-सम्बन्धे गोपी-गण, यारे माने निज-धन,
से सुधा अन्येर लभ्य नय ॥ १४२ ॥

एहो—यह; **ब्रजेन्द्र-नन्दन**—नन्द महाराज के पुत्र; **ब्रजेर**—वृन्दावन की; **कोन**—कोई; **कन्या-गण**—गोपियाँ; **अवश्य**—निश्चय ही; **करिब परिणय**—विवाह करेंगे; **से-सम्बन्धे**—इस सम्बन्ध में; **गोपी-गण**—गोपियाँ; **यारे**—जो; **माने**—सोचती हैं; **निज-धन**—निजी धन; **से सुधा**—वह अमृत; **अन्येर**—कोई दूसरे के द्वारा; **लभ्य नय**—प्राप्य नहीं है।

अनुवाद

"कुछ गोपियों ने अन्य गोपियों से कहा, 'जरा ब्रजेन्द्र नन्दन कृष्ण की आश्चर्यजनक लीलाओं को तो देखो! वे निश्चित रूप से वृन्दावन की सारी गोपियों के साथ विवाह करेंगे। इसीलिए गोपियाँ निश्चिन्त हैं कि कृष्ण के होठों का अमृत उनकी निजी सम्पत्ति है और इसे कोई दूसरा नहीं भोग सकता।'

गोपी-गण, कह सब करिया विचारे
कोन्तीर्थ, कोन्तप, कोन्सिद्ध-मन्त्र-जप, ।

এই বেণু কৈল জন্মান্তরে? ॥ ১৪৩॥

গোপী-গণ, কহ সব করিয়া বিচারে
কোন্ তীর্থ, কোন্ তপ, কোন্ সিদ্ধ-মন্ত্র-জপ, ।
এই বেণু কৈল জন্মান্তরে? ॥ ১৪৩॥

गोपी-गण—हे गोपियों; **कह**—कहो; **सब**—सब; **करिया विचारे**—पूरा विचार करके; **कोन्**—कौन से; **तीर्थ**—तीर्थ; **कोन्**—कौन से; **तप**—तप; **कोन्**—कौन से; **सिद्ध-मन्त्र-जप**—सिद्ध मन्त्र का जप; **एइ**—यह; **वेणु**—वंशी; **कैल**—किया; **जन्म-अन्तरे**—विगत जीवन में।

अनुवाद

"'हे गोपियों! ठीक से विचार करो कि इस वंशी ने अपने विगत जीवन में कितने पुण्यकर्म किये होंगे। हम नहीं जानतीं कि उसने कितने तीर्थों का भ्रमण किया, कौन सी तपस्या की अथवा कौन से सिद्ध मन्त्र का जप किया।

হেন কৃষ্ণাধর-সুধা, যে কৈল অমৃত মুধা,
যার আশায় গোপী ধরে প্রাণ ।
এই বেণু অয়োগ্য অতি, স্থাবর 'পুরুষ-জাতি',
সেই সুধা সদা করে পান ॥ ১৪৪॥

হেন কৃষ্ণাধর-সুধা, য়ে কৈল অমৃত মুধা,
য়ার আশায় গোপী ধরে প্রাণ ।
এই বেণু অযোগ্য অতি, স্থাবর 'পুরুষ-জাতি',
সেই সুধা সদা করে পান ॥ ১৪৪॥

हेन—ऐसे; **कृष्ण-अधर**—कृष्ण के होठों का; **सुधा**—अमृत; **य्रे**—जो; **कैल**—किया; **अमृत**—अमृत; **मुधा**—लाँघ दिया; **य्रार आशाय**—जिसकी आशा में; **गोपी**—गोपियाँ; **धरे प्राण**—जीना चालु रखती हैं; **एइ वेणु**—यह वंशी; **अयोग्य**—अयोग्य; **अति**—पूर्णतया; **स्थावर**—मृत; **पुरुष-जाति**—पुरुष जाति की; **सेइ सुधा**—वह अमृत; **सदा**—सदा; **करे पान**—पान करती है।

अनुवाद

"'यह वंशी सर्वथा अयोग्य है, क्योंकि यह केवल जड़ बाँस का खण्ड है। इतना ही नहीं, यह पुरुष जाति की है। फिर भी यह वंशी कृष्ण

के होठों के उस अमृत का पान कर रही है, जो प्रत्येक प्रकार के वर्णनयोग्य अमृत की मधुरता को लाँघने वाला है। गोपियाँ उस अमृत की आशा में ही जीवित हैं।

যার ধন, না কহে তারে, পান করে বলাত্কারে,
পিতে তারে ডাকিয়া জানায় ।
তার তপস্যার ফল, দেখ ইহার ভাগ্য-বল,
ইহার উচ্ছিষ্ট মহা-জনে খায় ॥ ১৪৫॥

য়ার ধন, না কহে তারে, পান করে বলাত্কারে,
পিতে তারে ডাকিয়া জানায় ।
তার তপস্যার ফল, দেখ ইহার ভাগ্য-বল,
ইহার উচ্ছিষ্ট মহা-জনে খায় ॥ ১৪৫॥

য়ার—जिसका; **धन**—धन; **ना कहे**—नहीं बोलता; **तारे**—उनको; **पान करे**—पान करता है; **बलात्कारे**—बलपूर्वक; **पिते**—पीते समय; **तारे**—उनको; **डाकिया**—जोर से पुकारकर; **जानाय**—बताता है; **तार**—उसकी; **तपस्यार**—तपस्या का; **फल**—फल; **देख**—देखकर; **इहार**—उसका; **भाग्य-बल**—भाग्य का बल; **इहार**—उसका; **उच्छिष्ट**—शेष; **महा-जने**—महाजन; **खाय**—पान करते हैं।

अनुवाद

"'यद्यपि कृष्ण के होठों का अमृत एक मात्र गोपियों का धन है, किन्तु यह नगण्य लाठी जैसी वंशी बलपूर्वक उस अमृत का पान कर रही है और गोपियों को भी पीने के लिए उच्च स्वर से निमन्त्रण दे रही है। जरा इस वंशी की तपस्या तथा सौभाग्य के बल को तो देखो! बड़े-बड़े भक्त तक वंशी द्वारा कृष्ण के होठों का अमृत पान किये जाने के बाद ही उस अमृत का पान करते हैं।

মানস-গঙ্গা, কালিন্দী, ভুবন-পাবনী নদী,
কৃষ্ণ যদি তাতে করে স্নান ।
বেণুর ঝুটাধর-রস, হঞা লোভে পরবশ,
সেই কালে হর্ষে করে পান ॥ ১৪৬॥

मानस-गङ्गा, कालिन्दी, भुवन-पावनी नदी,
कृष्ण यदि ताते करे स्नान ।
वेणुर झुटाधर-रस, हञा लोभे परवश,
सेइ काले हर्षे करे पान ॥ १४६ ॥

मानस-गङ्गा—दिव्य जगत् की गंगा; **कालिन्दी**—यमुना; **भुवन**—विश्व; **पावनी**—पवित्र करने वाली; **नदी**—नदियाँ; **कृष्ण**—भगवान् कृष्ण; **यदि**—यदि; **ताते**—उनमें; **करे स्नान**—स्नान करते हैं; **वेणुर**—वंशी का; **झुट-अधर-रस**—होठों का उच्छिष्ट रस; **हञा**—होकर; **लोभे**—लोभ से; **परवश**—वश में कर लेती; **सेइ काले**—उस समय; **हर्षे**—हर्ष में; **करे पान**—पीते।

अनुवाद

"'जब कृष्ण यमुना तथा मानस गंगा जैसी विश्व को पवित्र करने वाली नदियों में स्नान करते हैं, तब वे नदियाँ लोभ तथा हर्ष के साथ उनके होठों के अमृतमय रस के उच्छिष्ट का पान करती हैं।

এ-ত নারী রহু দূরে, বৃক্ষ সব তার তীরে,
তপ করে পর-উপকারী ।
নদীর শেষ-রস পাঞা, মূল-দ্বারে আকর্ষিয়া,
কেনে পিয়ে, বুঝিতে না পারি ॥১৪৭॥

ए-त नारी रहु दूरे, वृक्ष सब तार तीरे,
तप करे पर-उपकारी ।
नदीर शेष-रस पाञा, मूल-द्वारे आकर्षिया,
केने पिये, बुझिते ना पारि ॥ १४७॥

ए-त नारी—ये नारियाँ; **रहु दूरे**—को दूर रखकर; **वृक्ष**—वृक्ष; **सब**—सब; **तार तीरे**—उनके किनारों पर; **तप करे**—तप करते हैं; **पर-उपकारी**—सारे जीवों का कल्याण करने वाले; **नदीर**—नदियों का; **शेष-रस**—बचा हुआ अमृत रस; **पाञा**—पाकर; **मूल-द्वारे**—जड़ों से; **आकर्षिया**—खींचकर; **केने**—क्यों; **पिये**—पिया; **बुझिते ना पारि**—हम नहीं समझ पातीं।

अनुवाद

"'इन नदियों के अतिरिक्त, ये वृक्ष जो उनके किनारों पर महामुनियों की तरह खड़े हैं और सारे जीवों का कल्याण करने में लगे हैं, वे अपनी

जड़ों से नदी के जल को खींचकर कृष्ण के होठों के अमृत का पान करते रहते हैं। हम नहीं समझ पातीं कि वे इस तरह क्यों पान करते हैं।

निजाङ्कुरे पुलकित, पुष्पे हास्य विकसित,
मधु-मिषे वहे अश्रु-धार ।
वेणुरे मानि' निज-जाति, आर्येर येन पुत्र-नाति,
'वैष्णव' हैले आनन्द-विकार ॥ १४८ ॥

निजाङ्कुरे पुलकित, पुष्पे हास्य विकसित,
मधु-मिषे वहे अश्रु-धार ।
वेणुरे मानि' निज-जाति, आर्येर येन पुत्र-नाति,
'वैष्णव' हैले आनन्द-विकार ॥ १४८ ॥

निज-अङ्कुरे—उनके अंकुरों द्वारा; **पुलकित**—प्रसन्न; **पुष्पे**—फूलों द्वारा; **हास्य**—हँसते; **विकसित**—प्रतीत होते; **मधु-मिषे**—मधु के रूप में; **वहे**—बहते; **अश्रु-धार**—अश्रु की धारा गिराते; **वेणुरे**—वंशी; **मानि'**—मानकर; **निज-जाति**—इनके ही परिवार से; **आर्येर**—पूर्वज के; **येन**—जिस तरह; **पुत्र-नाति**—पुत्र या पौत्र; **वैष्णव**—वैष्णव; **हैले**—जब होते हैं; **आनन्द-विकार**—दिव्य सुख का विकार।

अनुवाद

"'यमुना तथा गंगा नदियों के किनारे के वृक्ष सदैव प्रसन्न रहते हैं। वे अपने फूलों से हँसते और झरते मधु के रूप में अश्रु गिराते प्रतीत होते हैं। जिस तरह वैष्णव पुत्र या पौत्र के पूर्वज दिव्य आनन्द का अनुभव करते हैं, उसी तरह ये वृक्ष भी आनन्दित हैं, क्योंकि वंशी इनके परिवार की सदस्या है।'

वेणुर तप जानि यबे, सेइ तप करि तबे,
ए—अयोग्य, आमरा—योग्या नारी ।
या ना पाञा दुःखे मरि, अयोग्य पिये सहिते नारि,
ताहा लागि' तपस्या विचारि ॥ १४९ ॥

वेणुर तप जानि यबे, सेइ तप करि तबे,
ए—अयोग्य, आमरा—योग्या नारी ।

याँ ना पाञा दुःखे मरि, अयोग्य पिये सहिते नारि,
ताहा लागि' तपस्या विचारि ॥ १४९ ॥

वेणुर—वंशी के; **तप**—तप को; **जानि**—जानकर; **यबे**—जब; **सेइ**—उन; **तप**—तप; **करि**—हम करते हैं; **तबे**—तब; **ए**—यह (वंशी); **अयोग्य**—अयोग्य; **आमरा**—हम; **योग्या नारी**—योग्य नारियाँ; **याँ**—जो; **ना पाञा**—नहीं पातीं; **दुःखे**—दुःख में; **मरि**—हम मरती हैं; **अयोग्य**—बहुत ही अयोग्य; **पिये**—पिती है; **सहिते नारि**—हम सहन नहीं कर सकतीं; **ताहा लागि'**—उस कारण से; **तपस्या**—तपस्या; **विचारि**—हम सोचती हैं।

अनुवाद

"गोपियों ने विचार किया, 'यह वंशी अपने पद के सर्वथा अयोग्य है। हम यह जानना चाहती हैं कि इस वंशी ने किस तरह की तपस्या की है, जिससे कि हम भी वही तपस्या कर सकें। यद्यपि यह वंशी अयोग्य है, किन्तु वह कृष्ण के होठों का अमृत पान कर रही है। यह देखकर हम योग्य गोपियाँ दुःख के मारे मरी जा रही हैं। इसलिए हमें वंशी द्वारा विगत जीवन में की हुई तपस्या पर विचार करना चाहिए।'"

এতেক প্রলাপ করি', প্রেমাবেশে গৌরহরি,
সঙ্গে লঞা স্বরূপ-রাম-রায় ।
কভু নাচে, কভু গায়, ভাবাবেশে মূর্চ্ছা যায়,
এই-রূপে রাত্রি-দিন যায় ॥ ১৫০ ॥

এতেক প্রলাপ করি', প্রেমাবেশে গৌরহরি,
সঙ্গে লঞা স্বরূপ-রাম-রায় ।
কভু নাচে, কভু গায়, ভাবাবেশে মূর্চ্ছা যায়,
এই-রূপে রাত্রি-দিন যায় ॥ १५० ॥

एतेक—इतना; **प्रलाप करि'**—उन्मत्त पुरुष की तरह बोलकर; **प्रेम-आवेशे**—प्रेमावेश में; **गौरहरि**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **सङ्गे लञा**—अपने साथ लेकर; **स्वरूप-राम-राय**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी और रामानन्द राय; **कभु नाचे**—कभी नाचते; **कभु गाय**—कभी गाते; **भाव-आवेशे**—प्रेमावश में; **मूर्च्छा याय**—मूर्छित हो जाते; **एइ-रूपे**—इस तरह; **रात्रि-दिन**—पूरी रात और दिन; **याय**—बिताते।

अनुवाद

इस प्रकार उन्मत्त पुरुष की तरह बातें करते हुए श्री चैतन्य महाप्रभु

प्रेमाविष्ट हो गये। वे स्वरूप दामोदर गोस्वामी तथा रामानन्द राय—इन अपने दो मित्रों के संग कभी नृत्य करते, कभी गाते, तो कभी प्रेमावेश में मूर्छित हो जाते। श्री चैतन्य महाप्रभु अपने दिन तथा अपनी रातें इसी प्रकार बिताते।

স্বরূপ, রূপ, সনাতন, রঘুনাথের শ্রী-চরণ,
শিরে ধরি' করি যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত, অমৃত হৈতে পরামৃত,
গায় দীন-হীন কৃষ্ণদাস ॥১৫১॥

स्वरूप, रूप, सनातन, रघुनाथेर श्री-चरण,
शिरे धरि' करि ग्रार आश ।
चैतन्य-चरितामृत, अमृत हैते परामृत,
गाय दीन-हीन कृष्णदास ॥ १५१ ॥

स्वरूप—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **रूप**—श्रील रूप गोस्वामी; **सनातन**—सनातन गोस्वामी; **रघुनाथेर**—रघुनाथ दास गोस्वामी के; **श्री-चरण**—चरणकमल; **शिरे**—सिर पर; **धरि'**—रखकर; **करि ग्रार आश**—कृपा की आशा करते हुए; **चैतन्य-चरितामृत**—*चैतन्य चरितामृत* नामक ग्रन्थ; **अमृत हैते**—अमृत से; **पर-अमृत**—बहुत अमृतमय; **गाय**—गाते हैं; **दीन-हीन**—दीनहीन; **कृष्णदास**—कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

स्वरूप, रूप, सनातन तथा रघुनाथ दास की कृपा की आशा करते हुए तथा उनके चरणकमलों को सिर पर धारण करते हुए मैं, अत्यन्त पतित कृष्णदास, श्री चैतन्य-चरितामृत महाकाव्य का गायन कर रहा हूँ, जो कि दिव्य आनन्द रूपी अमृत से भी मधुर है।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत अन्त्य लीला के अन्तर्गत श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा कृष्ण के अधरों का अमृतपान शीर्षक सोलहवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ।